शोध पत्रों को प्रकाशित करने के लिए विधि मान्य आई.एस.एस.एन 2321-9645

विश्व स्नेह समाज

वर्ष 17, अंक 9-10, जुलाई - अगस्त 2019

एक रचनात्मक क्रान्ति

17वां साहित्य मेला

काव्य सम्राट 2019 विजय प्रतिभागी

मूल्य : 15/-रू

16वां साहित्य मेला कैमरे की नजर में

काव्य सम्राट प्रतियोगिता में निर्णायक मण्डल के अध्यक्ष
श्री बुद्धसेन शर्मा अपने विचार व्यक्त करते हुए

विशिष्ट अतिथि श्री बादल चटर्जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए
सचिव डॉ० गोकुलेश्वर द्विवेदी

काव्य संग्रह 'अन्तर्वेदना' का विमोचन करते हुए अतिथिगण

डॉ० कामिनी अशोक वल्लभ को सम्मानित करते हुए
डॉ० शहाबुद्दीन नियाज मोहम्मद शेख एवं पूर्व डी.आई.जी श्री अशोक कुमार शुक्ला

डॉ० सुनील कुमार को सम्मानित करते हुए डॉ० उदय प्रताप सिंह
एवं अतिथिगण

कल, आज और कल भी बहुपयोगी
विश्व स्नेह समाज
मासिक, वर्षः18, अंकः 05,6
फरवरी/मार्च 2019

तीर्थराज प्रयाग एवं अर्ध कुम्भ.......6

साहित्य मेला एक कुंभ हैः 09

इस अंक में......

आगे बढ़ने के लिए जरुरी है ग़लतियों को स्वीकार करना.... 11
लोकतंत्र या भीड़तंत्र 15

स्थायी स्तम्भ

प्रेरक प्रसंग 5
भय, कानून का 13
एक प्रश्न 14
राजनीति से परे विचार 15
हिन्दुओं में विवाह रात्रि में क्यों होने लगे?..... 16
हिन्दीतर भाषी रचनाकार-ऊँ नमः शिवाय-विजय कुमार सम्पत्त 18
कविताए/गीत/ग़ज़लः आचार्य बलवन्त, श्री हरिहर चौधरी, रामचरण यादव, पं. मुकेश चतुर्वेदी, सरदार पंछी, रमेश राज 20–21
कहानीः बेटे की तमन्ना-कृष्ण कुमार यादव, पहला कदम-पवित्रा अग्रवाल, 22, 24,
साहित्य समाचार, ...3, 8,10,17, 27,32,33
प्रथम गुरु माता 28

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
संरक्षक सदस्य
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

ब्यूरो
ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी
निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संपादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 का0: 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं
पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।
प्रिंट लाईन–विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/

2001/8380, सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है. स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

नोटःपत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन–जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद–विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

काव्य सम्राट प्रतियोगिता-2019

इस प्रतियोगिता में किसी भी उम्र का कोई भी हिन्दी प्रेमी/हिन्दी भाषी प्रतिभागी बन सकता है। यह प्रतियोगिता तीन चरणों में सम्पन्न होगी। अंतिम चरण में सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागी को ही काव्य सम्राट की उपाधि व नगद 11000/रुपये प्रदान किए जाएंगे। अंतिम चरण के सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिया जाएगा। सभी प्रतिभागियों की रचनाओं को पुस्तकाकार में प्रकाशित भी किया जा सकता है।

नियम एवं शर्तेः

०१ इस प्रतियोगिता के लिए किसी भी उम्र का रचनाकार प्रतिभागी बन सकता है।

०२ प्रतियोगिता तीन चरणों में होगी। प्रथम चरण में शामिल सभी रचनाकारों की रचनाओं को पुस्तकाकार में प्रकाशित किया जा सकता है। जिसकी एक प्रति साधारण डाक से प्रतिभागी को भी प्रेषित की जाएगी।

०३ पाठकों की राय के आधार पर द्वितीय चरण के लिए केवल 21 रचनाकारों का चयन किया जाएगा। त्रिस्तरीय निर्णायक मंडल द्वारा रचनाओं का स्तर, शैली, शब्द रचना को देखकर तृतीय एवं अंतिम चरण के लिए 11 रचनाकारों का चयन किया जाएगा।

०५ तृतीय चरण में चयनित रचनाकारों को स्वयं उपस्थित होकर काव्य पाठ करना होगा। तीसरे चरण के सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र दिया जायेगा। प्रत्येक चरण में विजयी प्रतिभागियों को सूचना मोबाइल संदेश/ व्हाटसऐप/ ईमेल से दी जाएगी।

०५ सर्वश्रेष्ठ/विजेता को काव्य सम्राट की उपाधि, व नगद राशि व उपहार दिया जाएगा।

०६ प्रतिभागी को मौलिकता दशार्ते हुए एक रचना के साथ एक फोटो, नाम, पिता का नाम, जन्म तिथि, पता, ईमेल/व्हाटसएप नंबर, दूरभाष भेजनी होगी तथा रुपये दो सौ का धनादेश/चेक/डीडी अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से **'सचिव विष्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा।

आवेदन की अंतिम तिथि 15 नवम्बर 2019

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,

65ए/2, रामचन्द्र मिशन रोड, लक्सों कंपनी के सामने, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011,

ह्वाटसएप नं0: 9335155949, sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

प्रेरक प्रसंग

क्षमा महान गुण है

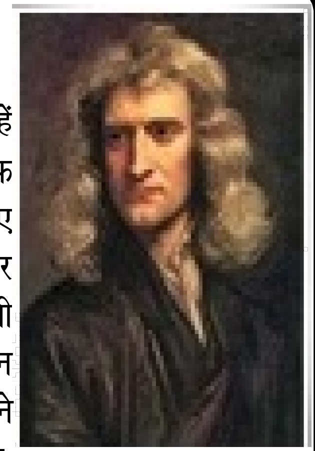

भौतिक विज्ञान के विकास में जिन वैज्ञानिकों का महत्वपूर्ण योगदान है उसमें आइजक न्यूटन का अप्रतिम योगदान है. वे कहा करते –**'कठिनाइयों से गुजरे बिना कोई अपने लक्ष्य को नहीं पा सकता. जिस उद्देश्य का मार्ग कठिनाइयों के बीच नहीं जाता, उसकी उच्चता में सन्देह करना चाहिए.**

वे प्रकाश के सिद्धातों की खोज में बीस वर्षो से लगे थे. अनेक शोधपत्र तैयार किये थे. वे मेज पर पड़े थे, वहीं लैम्प जल रहा था, उनका कुत्ता डायड उछला और मेज पर चढ़ गया. लैम्प पलट गया. मेज पर आग लग गई. देखते-देखते बीस वर्षो की कठिन तपस्या से तैयार षोधपत्र जलकर खाक हो गए. न्यूटन जब टहलकर आए, तो इस दृष्य को देखकर उन्हें अपार कष्ट हुआ. एक क्षण तो इतने उद्विग्न हुए कि डायमंड को मार कर खत्म करने की बात भी सोचने लगे, लेकिन न्यूटन ने ऐसा नहीं किया. उन्होंने डायमंड को पास बुलाया, उसकी पीठ पर हाथ रखा, सिर थपथपाते हुए कहा, 'ओ डायमंड. जो नुकसान तूने पहुंचाया है, तू नहीं जानता.'

उन्होंने धैर्यपूर्वक सारे शोधपत्र की सामग्री को अपनी स्मृति में खोजा और फिर उसी उत्साह से नया शोधपत्र तैयार करने में जुट गए.

सभी खिलाफ, फिर भी शहरों में लगता है जाम...

तीर्थराज प्रयाग एवं अर्ध कुम्भ

प्रयागराज को संगम नगरी, कुम्भ नगरी और तीर्थराज भी कहा गया है।

प्रयाग शताध्यायी के अनुसार काशी, मथुरा, अयोध्या, कांची, माया, हरिद्वार, अवन्तिका, उज्जयनी, द्वारिका सप्तपुरियां तीर्थराज प्रयाग की पटरानियां हैं। तीर्थराज प्रयाग की विशालता व पवित्रता के सम्बन्ध में सनातन धर्म में मान्यता है कि एक बार देवताओं ने सप्तदीप, सप्त समुद्र, सप्त पर्वत, सप्त पुरियां, सभी तीर्थ एवं समस्त नदियां तराजू के एक पलड़े पर रखीं दूसरी ओर मात्र तीर्थराज प्रयागराज को रखा फिर भी प्रयागराज ही भारी रहे।

–पं० सुधा तिवारी
अ.प्रा.वरिष्ठ प्रभागीय लेखाधिकारी

**को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ, कलुष पुंज कुंजर मष्पराऊ।
सकल कामप्रद तीरथराऊ, वेद विदित जग प्रगट प्रभाऊ।।**

प्रयागराज के प्रभाव का वर्णन कौन कर सकता है जो कलियुग रूपी हांथी के लिए सिंह के समान है। तीर्थराज प्रयागराज सम्पूर्ण मनोकामनाओं की पूर्ति करने वाले हैं, इनका प्रभाव प्रकट रूप से वेदों एवं संसार को ज्ञात है।

अपना आश्रम बनाकर यहाँ रहने वाले भरद्वाज ऋषि भी इनके प्रभाव का सम्पूर्ण वर्णन नहीं कर सके हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार चार वेदों की प्राप्ति के पश्चात ब्रह्मा जी ने यहीं पर प्रथम यज्ञ किया था। अतः सृष्टि की प्रथम यज्ञस्थली होने के कारण इसे प्रयाग कहा गया। प्रयाग माने प्रथम यज्ञ। कालान्तर में मुगल सम्राट अकबर ने इस नगर का नाम इलाहाबाद कर दिया, जिसे पुनः वर्ष 2018 में उत्तर प्रदेश सरकार ने इसकी प्राचीनता एवं महत्ता के दृष्टिगत इस नगर का नाम प्रयागराज कर दिया।

प्रयागराज एक अत्यन्त पवित्र नगर है, जिसकी पवित्रता गंगा, यमुना एवं अदृश्य सरस्वती के संगम के कारण है। वेद से लेकर पुराणों तक एवं संस्कृत कवियों से लेकर लोक साहित्य के रचनाकारों तक ने इस संगम की महिमा का गान किया है। प्रयागराज को संगम नगरी, कुम्भ नगरी और तीर्थराज भी कहा गया है।

प्रयाग शताध्यायी के अनुसार काशी, मथुरा, अयोध्या, कांची, माया, हरिद्वार, अवन्तिका, उज्जयनी, द्वारिका सप्तपुरियां तीर्थराज प्रयाग की पटरानियां हैं। तीर्थराज प्रयाग की विशालता व पवित्रता के सम्बन्ध में सनातन धर्म में मान्यता है कि एक बार देवताओं ने सप्तदीप, सप्त समुद्र, सप्त पर्वत, सप्त पुरियां, सभी तीर्थ एवं समस्त नदियां तराजू के एक पलड़े पर रखीं दूसरी ओर मात्र तीर्थराज प्रयागराज को रखा फिर भी प्रयागराज ही भारी रहे। वस्तुतः गोमुख से प्रयागराज तक जहां कहीं भी कोई नदी गंगा से मिली है, उस स्थान को प्रयाग कहा गया है। जैसे- देव प्रयाग, कर्ण प्रयाग, रुद्र प्रयाग आदि।

तीर्थ दो प्रकार के होते हैं एक कामनाओं को पूर्ण करने वाले और दूसरे मोक्ष देने वाले। जिस तीर्थ में कामनाओं की पूर्ति और मोक्ष की प्राप्ति दोनों ही एक साथ हों वह एक मात्र तीर्थ प्रयागराज है। यही वह तीर्थ है जहां धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चतुर्थ पुरुषार्थ की प्राप्ति होती है। इसीलिए प्रयाग को तीर्थराज कहा गया है। कूर्म पुराण के अनुसार इस तीर्थ की रक्षा ब्रह्मा तथा अन्य देवता एक साथ ही करते हैं।

''तत्र ब्रह्मादयो देवारू रक्षां कुर्वन्ति संगतः।''

व्यवहारिक एवं लोकतांत्रिक दृष्टि से भी प्रयागराज तीर्थों के राजा हैं: वेद, पुराण, संतमत के साथ ही प्रयागराज महाराज का लोकमत से भी तीर्थराज होना सिद्ध है। पूरे विश्व में किसी भी धर्म का कोई ऐसा तीर्थ नहीं जहां लम्बें समय तक और वह भी करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु आते हों। प्रत्येक पांच वर्ष बाद छठे वर्ष में अर्द्ध

कुम्भ एवं पुनः पांच वर्ष बाद यानि कि बारहवें वर्ष में पूर्ण कुम्भ के अवसर पर केवल प्रयाग में ही इतनी अधिक संख्या में श्रद्धालुओं का आगमन होता है। श्रद्धालुओं का आना उनकी तीर्थराज के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास के कारण ही होता है। यह विश्वास अथवा मत हजारों वर्षों से बरकरार चला आ रहा है। यह लोकमत ही तो लोकतांत्रिक व्यवस्था में श्रेष्ठता एवं मान्यता का परिचायक है। इतना ही नहीं तीर्थ राज में प्रत्येक वर्ष माघ मेला के अवसर पर यहां आने वाले श्रद्धालु इस विश्वास की पुष्टि भी करते हैं जोकि दुनिया की किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रतिवर्ष विश्वास मत प्राप्त करने जैसा प्रावधान नहीं है।

प्रयागराज एवं कुम्भः सनातन धर्म के अनुसार भारत मे मनाया जाने वाला विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक मेला कुंभ पर्व हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण पर्व है, जिसमें करोड़ों श्रद्धालु कुंभ पर्व स्थल प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में स्नान करते हैं। इनमें से प्रत्येक स्थान पर प्रति बारहवें वर्ष और प्रयागराज एवं हरिद्वार में दो कुंभ पर्वों के बीच छह वर्ष के अंतराल में अर्धकुंभ भी होता है। २०१६ में प्रयाग में अर्धकुंभ मेले का आयोजन हो रहा है।

खगोल गणनाओं के अनुसार यह मेला मकर संक्रांति के दिन प्रारम्भ होता है, जब सूर्य और चन्द्रमा, वृश्चिक राशी में और वृहस्पति, मेष राशी में प्रवेश करते हैं। मकर संक्रांति के होने वाले इस योग को 'कुम्भ स्नान-योग' कहते हैं और इस दिन को विशेष शुभ माना जाता है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि इस दिन पृथ्वी से उच्च लोकों के द्वार खुलते हैं और इस दिन स्नान करने से आत्मा को उच्च लोकों की प्राप्ति सहजता से हो जाती है। यहाँ स्नान करना साक्षात स्वर्ग दर्शन माना जाता है। 'अर्ध' शब्द का अर्थ होता है आधा और इसी कारण बारह वर्षों के अंतराल में आयोजित होने वाले पूर्ण कुम्भ के बीच अर्थात पूर्ण कुम्भ के छः वर्ष बाद अर्ध कुंभ आयोजित होता है।

ज्योतिषीय महत्व- ज्योतिषियों के अनुसार इस पर के ग्रहों की स्थिति प्रयागराज के संगम पर गंगा जल को औषधिकृत करती है तथा उन दिनों गंगा जी अमृतमय हो जाती है। यही कारण है कि अपनी अंतरात्मा की शुद्धि हेतु पवित्र स्नान करने करोड़ों श्रद्धालु यहाँ आते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से अर्ध कुंभ के काल में ग्रहों की स्थिति एकाग्रता तथा ध्यान साधना के लिए उत्कृष्ट होती है।

पौराणिक कथाएँ- सागर मन्थन- कुंभ पर्व के आयोजन को लेकर अनेक पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं, जिनमें से सर्वाधिक मान्य कथा देव-दानवों द्वारा समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत कुंभ से अमृत बूँदें गिरने को लेकर है। इस कथा के अनुसार महर्षि दुर्वासा के शाप के कारण जब इंद्र और अन्य देवता कमजोर हो गए तो दैत्यों ने देवताओं पर आक्रमण कर उन्हें परास्त कर दिया। तब सब देवता मिलकर भगवान विष्णु के पास गए और उन्हे सारा वृतान्त सुनाया। तब भगवान विष्णु ने उन्हे दैत्यों के साथ मिलकर क्षीरसागर का मंथन करके अमृत निकालने की सलाह दी। भगवान विष्णु के ऐसा कहने पर संपूर्ण देवता दैत्यों के साथ संधि करके अमृत निकालने के यत्न में लग गए। अमृत कुंभ के निकलते ही देवताओं के इशारे से इंद्रपुत्र 'जयंत' अमृत-कलश को लेकर आकाश में उड़ गया। उसके बाद दैत्यगुरु शुक्राचार्य के आदेशानुसार दैत्यों ने अमृत को वापस लेने के लिए जयंत का पीछा किया और घोर परिश्रम के बाद उन्होंने बीच रास्ते में ही जयंत को पकड़ा। तत्पश्चात अमृत कलश पर अधिकार जमाने के लिए देव- दानवों में बारह दिन तक अविराम युद्ध होता रहा।

इस परस्पर संघर्ष के दौरान पृथ्वी के चार स्थानों (प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक) पर कलश से अमृत बूँदें गिरी थीं। उस समय चंद्रमा ने घट से प्रस्रवण होने से, सूर्य ने घट फूटने से, गुरु ने

दैत्यों के अपहरण से एवं शनि ने देवेन्द्र के भय से घट की रक्षा की। कलह शांत करने के लिए भगवान ने मोहिनी रूप धारण कर यथाधिकार सबको अमृत बाँटकर पिला दिया। इस प्रकार देव-दानव युद्ध का अंत किया गया।

अमृत प्राप्ति के लिए देव-दानवों में परस्पर बारह दिन तक निरंतर युद्ध हुआ था। देवताओं के बारह दिन मनुष्यों के बारह वर्ष के तुल्य होते हैं। अतएव कुंभ भी बारह होते हैं। उनमें से चार कुंभ पृथ्वी पर होते हैं और शेष आठ कुंभ देवलोक में होते हैं, जिन्हें देवगण ही प्राप्त कर सकते हैं, मनुष्यों की वहाँ पहुँच नहीं है।

जिस समय में चंद्रादिकों ने कलश की रक्षा की थी, उस समय की वर्तमान राशियों पर रक्षा करने वाले चंद्र-सूर्यादिक ग्रह जब आते हैं, उस समय कुंभ का योग होता है अर्थात जिस वर्ष, जिस राशि पर सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति का संयोग होता है, उसी वर्ष, उसी राशि के योग में, जहाँ-जहाँ अमृत बूँद गिरी थी, वहाँ-वहाँ कुंभ पर्व होता है। यह संयोग प्रयागराज एवं हरिद्वार में प्रत्येक 6 वर्ष में भी होता है अतः इन तीर्थी में अर्द्ध कुम्भ का आयोजन किया जाता है।

विशेष दिन-इस वर्ष अर्द्ध कुम्भ 2019 स्नान के लिए जो दिन विशेष हैं वो इस प्रकार हैं-मकर संक्रांति-15.01.2019, पौष पूर्णिमा-21.01.2019, मौनी अमावस्या-04.01.2019, वसन्त पंचमी-10.02.2019, माघी पूर्णिमा-19.02.2019, महाशिवरात्रि—04.3.2019

इतिहास- जैसा कि इस पर्व के आयोजन से जुड़े कथानक से स्पष्ट होता है इस धार्मिक स्नान का आयोजन उतना ही पुराना है जितना कि देवासुर संग्राम की घटना। आधुनिक इतिहासकर एस.बी. राय ने दस हजार ईसापूर्व में अनुष्ठानिक नदी स्नान को सप्रमाण सिद्ध किया है। 600ई.पू.- बौद्ध लेखों में नदी मेलों की उपस्थिति का जिक्र मिलता है। 400 ई.पू.- सम्राट चन्द्रगुप्त के दरबार में यूनानी दूत ने एक मेले को प्रतिवेदित किया था। ई.पू. 300 ईस्वी तक मेले का वर्तमान स्वरूप आकार लिया। 600ईस्वी में चीनी यात्री ह्यान-सेंग ने प्रयाग (वर्तमान प्रयागराज) पर सम्राट हर्ष द्वारा आयोजित कुम्भ में स्नान किया था।

डॉ० राम मोहन पाठक को कुलपति बनाये जाने पर हार्दिक बधाई

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के पत्रकारिता संस्थान के पूर्व निदेशक एवं बीएचयू के पूर्व जनसंपर्क अधिकारी प्रोफेसर राम मोहन पाठक को महात्मा गांधी द्वारा १०० पूर्व स्थापित एवं भारतीय संसद द्वारा घोषित राष्ट्रीय महत्व की संस्था 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' के कुलपति बनाये जाने पर मीडिया फोरम ऑफ इंडिया न्यास एवं विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की ओर से डॉ० पाठक को बधाई दी गई। विदित हो कि डॉ० मीडिया फोरम ऑफ इंडिया न्यास के राष्ट्रीय संरक्षक भी है।

डॉ० पाठक को शिक्षकश्री, यश भारती सम्मान, पराड़कर पुरस्कार, भारतेंदु पुरस्कार सहित अनेकों प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त है तथा आप भारत सरकार के विदेश मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य भी है।

बैठक में मीडिया फोरम ऑफ इंडिया न्यास के श्री महेन्द्र कुमार अग्रवाल, मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी, डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, ईश्वर शरण शुक्ला, डॉ० जया द्विवेदी, निगम प्रकाश कश्यप सहित न्यास एवं संस्थान के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने बधाई दी।

17वॉ साहित्य मेला

साहित्य मेला एक कुंभ है: डॉ० उदय प्रताप सिंह

- काव्य सम्राट को मिला 11000/रु०नगद और सम्राट मुकुट
- पंजाब के डॉ० सुनील कुमार को मिली संस्थान की सबसे बड़ी उपाधि
- बहुचर्चित आई.ए.एस. श्री बादल चटर्जी को प्रशासक श्री

17 फरवरी 2019, प्रयागराज। साहित्य मेला एक कुंभ है. इसमें देश के कोने-कोने से आए साहित्यकारों, कवियों का संगम हुआ. भाषा, साहित्य के सन्दर्भ में जो कार्य आंदोलनों के जरिये पूर्ण नहीं हुआ, उस दिशा में यह आयोजन सार्थक रहा. हिन्दी भाषा का स्वरूप निरंतर बढ़ रहा है. हिन्दी भाषा सेतु बनकर समाज, राष्ट्र व विश्वविद्यालय को एक सूत्र में पिरोने की दिशा में अग्रसर है. क्षेत्रीय बोलियों को समष्द्ध करने से इसका विस्तार और अधिक होगा.

यह विचार हिन्दुस्तानी एकेडेमी के राज्यमंत्री दर्जा प्राप्त अध्यक्ष-हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयागराज व आयोजन के मुख्य अतिथि डॉ० उदय प्रताप सिंह ने विश्वविद्यालय हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की ओर से आयोजित '१७वें साहित्य मेला' में व्यक्त किए. हिन्दुस्तानी एकेडेमी सभागार में हुए कार्यक्रम में बोलते हुए विशिष्ट अतिथि पूर्व मंडलायुक्त बादल चटर्जी ने कहा 'हिन्दी सोशल मीडिया, सिनेमा, पत्र-पत्रिकाओं के जरिये देश के हर भाग में पहुंच रही है. हिन्दी राष्ट्रीय एकता की पहचान है. साहित्यकारों को लेखनी के जरिये सामाजिक कुरीतियों को दूर करना चाहिए. विशिष्ट अतिथि पूर्व उप पुलिस महानिरीक्षक अशोक कुमार शुक्ल ने कहा कि हिन्दी प्रसाद, महादेवी, पंत और निराला की विरासत है. हिन्दी साहित्य कला, संस्कृति की केन्द्र रही है.

इस अवसर पर आयोजित सम्मान समारोह व काव्य सम्राट प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को अतिथियों ने शाल, स्मृति चिन्ह, उपाधि का मुकुट पहनाकर सम्मानित किया गया.

साहित्यकारों में डॉ०सुनील कुमार, पंजाब

को साहित्य रत्न, श्री बादल चटर्जी, प्रयागराज को प्रशासकीश्री, डॉ. मनिका शइकीया-असम व डॉ० मधुकर देशमुख-महाराष्ट्र को राष्ट्रभाषा सम्मान, डॉ० कामिनी अशोक बल्लाल, महाराष्ट्र को शिक्षकश्री, श्री मिथिलेश कुमार श्रीवास्तव, सोनभद्र को राजभाषा सम्मान, डॉ० कमलेश शुक्ल-कानपुर एवं श्रीमती पूनम रानी शर्मा, हरियाणा को हिन्दी सेवी सम्मान, लेफ्टिनेंट जया शुक्ला, इलाहाबाद को विद्या वाचस्पति और डॉ० रमा सिंह, प्रयागराज को समाज श्री से सम्मानित किया गया.

श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति न्यास की ओर से भी ६ साहित्यकारों को सम्मानित किया गया. साथी ही मीडिया फोरम ऑफ इंडिया न्यास की ओर से भी चार पत्रकारों को सम्मानित किया गया।

संस्था सचिव एवं कार्यक्रम संयोजक डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने अतिथियों का स्वागत एवं स्मृति चिन्ह, शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया. आभार ज्ञापन संस्थान के अध्यक्ष डॉ० शहाबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख ने किया। अतिथियों को माल्यार्पण हिन्दी सांसद श्री ओम प्रकाश त्रिपाठी, मीडिया फोरम ऑफ इंडिया न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी, निगम प्रकाश कश्यप ने किया तथा कार्यक्रम का संचालन ईश्वर शरण शुक्ल ने किया.

इस अवसर पर अशोक कुमार गुप्ता, आलोक चतुर्वेदी, डॉ. बालकृष्ण पाण्डेय, हेमंत कुशवाहा, स्वप्निल शर्मा, संतोष तिवारी, श्रीमती गरिमा श्रीवास्तव, टी. एन.दास, संध्या वर्मा, आचार्य रामदत्त मिश्र, राम लखन शुक्ल, अधिवक्ता बालकृष्ण पाण्डेय, विमलेश शुक्ल, प्रदीप मिश्र, टी.एन.दास, वीरू, श्रीमती आर. सिंह, मुकुल पाठक आदि मौजूद रहे.

ऊपर से बाये से दाये क्रमशः ईश्वर शरण शुक्ल, कार्यक्रम का संचालन, निगम प्रकाश कश्यप माल्यार्पण, श्रीमती पूनम रानी शर्मा करते हुए, सम्मानित हुए विद्वजन, अशोक कुमार गुप्ता, श्री मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी एवं डॉ० मधुकर देशमुख को सम्मानित करते हुए अतिथिगण

दिल्ली की पुनम माटिया बनी काव्य सम्राट 2019

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में काव्य सम्राट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता का यह तीसरा वर्ष था. जिसके निर्णायक मंडल में राष्ट्रीय स्तर के सुप्रसिद्ध ग़ज़लकार बुद्धिसेन शर्मा, साहित्यकार प्रद्युम्न नाथ त्रिपाठी 'करूणेश', इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त हिन्दी प्राचार्य प्रो० क्षमा शंकर पाण्डेय और सुप्रसिद्ध कवि रामायण प्रसाद पाठक रहे। कुल 45 प्रतिभागियों में से 11 कवियों का चयन तीसरे एवं अंतिम चरण के लिए किया गया था। जिसमें दिल्ली की डॉ. पूनम माटिया को काव्य सम्राट-2019 में विजयी रही। उन्हें 11000/रुपये नगद, सम्राट का ताज, अंगवस्त्रम प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। अंतिम चरण के लिए चयनित अन्य प्रतिभागियों में राजीव कुमार दास-हजारीबाग, झारखंड, आचार्य अनमोल, नई दिल्ली, वन्दना श्रीवास्तव-लखनऊ, उ.प्र., डॉ० पी. आर.वासुदेवन-चेन्नई, तमिलनाडु, श्री पुरूषोत्तम सिंह राठौर, राजनंदगांव, छत्तीसगढ़, श्री ओमवीर करन, दुर्ग, छत्तीसगढ़,श्रीमती पूनम रानी शर्मा-कैथल, हरियाणा, श्रीमती संतोष शर्मा 'शान' हाथरस, उ.प्र. थी. डॉ०राजलक्ष्मी कृष्णनन, चेन्नई, तमिलनाडु तथा सीमा चौधरी, नई दिल्ली अपरिहार्य कारणो वश अनुपस्थित रहीं. आयोजन में गत वर्ष के विजेता श्री नरेन्द्र भूषण ने अपने विचार रखें.

श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति न्यास द्वारा सम्मानित हुए

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष श्री पवहारी शरण द्विवेदी की स्मृति में १५ मार्च २०१२ श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति न्यास की स्थापना की गई. जिसमें २०१३ से २०१५ तक श्री पवहारी शरण द्विवेदी समाज सेवी सम्मान ही दिया जाता था। तदोपरान्त २०१६ से लगातार साहित्यकारों, पत्रकारों एवं समाज सेवियों को न्यास की ओर से सम्मानित किया जा रहा है। प्रत्येक वर्ष न्यास का सम्मान समारोह भी साहित्य मेला में ही किया जा रहा है. आगे भी इसे साहित्य मेला के अवसर पर ही दिया जाता रहेगा. कोई परिवर्तन की सूचना होने पर सभी सम्मानितों विद्वजनों को सूचनाओं से अवगत कराया जायेगा. इस वर्ष न्यास की ओर डॉ० हितेश कुमार शर्मा, बिजनौर, उ.प्र. को राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान, श्री शिवकरण दूबे 'वेदराही', रीवा, म.प्र. को हिन्दी सेवी सम्मान, श्रीमती सीमा वर्मा, लखनऊ, उ.प्र. को उपेन्द्र नाथ अश्क सम्मान, श्री प्रभाषु कुमार, इलाहाबाद, उ.प्र. को कैलाश गौतम सम्मान, डॉ० सुनीता सिंह, बिजनौर, उ.प्र. को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

मीडिया फोरम ऑफ इंडिया न्यास से सम्मानित हुए

मीडिया फोरम ऑफ इंडिया न्यास की ओर 17वें साहित्य मेला के अवसर पर एसोसिएट प्रोफसेर-मास कम्युनिकेशन एण्ड विडियो प्रोडक्शन विभाग, हरिश्चन्द्र पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, वाराणसी के पद पर पदासिन डॉ० परमात्मा कुमार मिश्रा को पत्रकार गौरव की मानद उपाधि से विभूषित किया गया. इसके साथ ही सोनभद्र से पधारे मीडिया फोरम ऑफ इंडिया न्यास के जिलाध्यक्ष व्युरो प्रमुख श्री राजेश कुमार गोस्वामी, सोनभद्र के पत्रकार श्री प्रमोद कुमार गुप्ता और संजीव कुमार श्रीवास्तव को प्रशस्ति पत्र देकर पत्रकारिता के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए सम्मानित किया गया. इस अवसर पर फोरम के कार्यकारी अध्यक्ष एवं मान्यता प्राप्त पत्रकार मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी अपने गृह जनपद से पत्रकारों की एक टीम के साथ उपस्थित रहे. यह फोरम का 8वां स्थापना दिवस भी था. फोरम की स्थापना ११ फरवरी २०११ को साहित्य मेला के अवसर पर ही की गई थी.

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

हिन्दी मासिक

एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011, मो0: 9335155949

एक प्रति–15 / रुपये,
वार्षिक–150 / रुपये,
पंचवर्षीय–700 / रुपये,
आजीवन–2100 / रुपये

लोकतंत्र या भीड़तंत्र

–डॉ.आई.ए.मंसूरी शास्त्री,
संपादक, भाग्य दर्पण मासिक,
खीरी, उ.प्र.

भारत का लोकतंत्र दुनियां के लोकतंत्र से विशाल और शक्ति शाली है. परन्तु कुछ वर्षो से कानून व्यवस्था की खराब स्थिति और लोकतंत्र पर भीड़तंत्र को हाबी होता देख ऐसा लगता है कि अब लोकतंत्र भीड़तंत्र में बदल रहा है. देश का शासन अब जंगल राज की ओर अग्रसर हो रहा है. पहले अनपराधी जो बिहड़ों में और चम्बल घाटी में पनाह ले रहे थे उन्हें अब सरकारी संक्षण मिल रहा है. अब वे सांसद और विधायक के रूप में जनता के बीच माननीय बने हुए हैं. इन्हीं पर देश का कानून निर्मित करने का जिम्मा सौंपा गया है. कल्पना की जा सकती है कि जब ऐसे लोग विधायिका में रहेंगे तो देश का कानून कैसा बनेगा. बलात्कारी से लेकर हत्या के आरोपियों तक से हमारे देश की संसद व विधान सभाएं भरी हुई हैं. थानों में अपराधी घुस कर पुलिस अभिरक्षा में कभी लोगों की हत्या कर देते हैं तो कभी पुलिस द्वारा पीट-पीट कर बन्दी की हत्या कर देने का मामला सामने आता है. भारतीय जेल से कभी कुख्यात अपराधी भाग जाते हैं, तो कभी जेल के अन्दर ही उनकी हत्या कर दी जाती है. जेल के अन्दर अक्सर असलहे मिलने और जेल के अन्दर बन्दी अपराधियों द्वारा जेल के अन्दर से ही हत्याएं व अपराध ा कराये जाने के मामले सामने आते हैं.

भारतीय जेल की हालत बद से बदतर हो चुकी है. पुलिस हिरासत में और न्यायिक हिरासत में जेल में बन्द लोगों की जब हत्या की जाये तो इसे सरकारी हत्या ही कहा जायेगा. जो भारतीय कानून के अनुसार अपराध है. यह राजनीति और अपराध के गठजोड़ का ही द्योतक है. बागपत जेल में बन्द कुख्यात अपराधी मुन्ना बजरंगी की हत्या होना और जेल से असलहों का मिलना इसका पुख्ता प्रमाण है. यह कार्य बिना राजनीतिक संरक्षण और जेल प्रशासन के मिले संभव ही नहीं है. माना कि मुन्ना बजरंगी अपराधी था परन्तु इसका मतलब कतई यह नहीं हो सकता कि उसकी हत्या करा दी जाये. वह विचाराधीन कैदी था उसके विषय में अदालत को फैसला करना था.

भारतीय कानून में भी दोहरी कानून व्यवस्था है. आम आदमी और खास आदमी का अन्तर है. यदि कोई आम आदमी कोई अपराध करता है तो रिपोर्ट दर्ज होने के बाद पुलिस तुरन्त उसे गिरफ्तार कर जेल भेज देती है, उसके बाद उसकी जांच होती है, और ऐसा ही अपराध जब कोई प्रभावशाली व्यक्ति करता है तो रिपोर्ट दर्जन होने के बाद पहले उसकी जांच होती है उसके बाद गिरफ्तारी होती है. वह इसलिए की प्रभाव शाली व्यक्ति अपने प्रभाव से साक्ष्य मिटा सके और वह उस अपराध से बरी किया जा सके. यही दोहरी व्यवस्था जेल में भी है. प्रभाव शाली अपराधियों को जेल में सारी सुख सुविधाएं दी जाती हैं, वे जेल के अन्दर दरबार तक लगाते हैं. जबकि आम कैदी को शुद्ध विस्तर तक नहीं मिलता है. इस व्यवस्था के चलते आम आदमी का कानून व्यवस्था से भरोसा उठना स्वभाविक है.

बढ़ते अपराध और लोकतंत्र पर हावी होते भीड़तंत्र को देखते हुए भारत की शीर्ष अदालत को भी कानून व्यवस्था

पर तल्ख टिप्पणी करना पड़ा. भीड़तंत्र के गुंडागर्दी पर 17 जुलाई को सुप्रीम कोर्ट को कहना पड़ा कि भीड़ द्वारा पीट-पीट कर किसी को मार डालने का अधिकार किसी को नहीं है. भीड़तंत्र को कानून की अनदेखी कर भयानक कृत्य करने की इजाजत नहीं दी जा सकती. सरकार लोगों की चीख पुकार को अनसुना नहीं कर सकती. हालत की गंभीरता को देखते हुए तत्काल ठोस और मजबूत कार्यवाही की जरूरत है, ताकि सबको साथ लेकर चलने की सामाजिक संरचना और संवैधानिक भरोसा कायम रहे. ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए सर्वोच्च न्यायालय ने दिशा निर्देश जारी किया है, साथ ही संसद से भीड़ द्वारा पीट-पीटकर हत्या की अलग से अपराध बनाएं जाने और उनके लिए उचित दण्ड निर्धारित करने का निर्देश दिया है. कोर्ट ने कहा है की ऐसा कानून ऐसे कृत्यों में शामिल लोगों के मन में भय पैदा करेगा. कानून का भय और उसका सम्मान सभ्य समाज की नींव है.

सुप्रीम कोर्ट ने गो रक्षा और अन्य कारणों से भीड़ द्वारा लोगों की जान लिए जाने पर तीखी टिप्पणियां करते हुए यह ऐतिहासिक फैसला सुनाया है. ऐसी घटनाओं पर लगाम लगाने के लिए निरोधक, सुधारात्मक और दण्डात्मक उपाय के विस्तृत दिशा निर्देश जारी किये हैं. केन्द्र और राज्यों से इस पर चार सप्ताह में इस पर अमल करने को कहा है साथ ही उनसे रिपोर्अ भी तलब की गई है.

निश्चित रूप से सर्वोच्च न्यायालय की यह टिप्पणी और फैसला सुस्वागत योग्य है. इससे नागरिकों में अदालतों और कानून के प्रति विश्वास बढ़ेगा. भारत जैसे बहुभाषी, बहुधर्मी, बहु समुदायिक देश में भीड़तंत्र के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए. भारतीय सविधान की भी यह अवधारणा है. अनेकता में एकता ही हमारी ताकत है. कानून व्यवस्था को और चुस्त दुरूस्त करने व अपराध के विरूद्ध त्वरित तथा निष्पक्ष कार्यवाही करने की आवश्यकता है.

प्रविष्टियां आमंत्रित है

काव्य के क्षेत्र में: कैलाश गौतम सम्मान-(हास्य/व्यंग्य रचना), स्व.किशोरी लाल सम्मान (श्रृंगार रस की एक रचना पर), महादेवी वर्मा सम्मान (छायावादी रचना पर) **गद्य के क्षेत्र में**: डॉ. रामकुमार वर्मा सम्मान (नाटक) उपेन्द्र नाथ अश्क सम्मान (कहॉनी/उपन्यास/लघु कथा) **हिन्दी सेवी सम्मान**-ऐसे व्यक्ति जो किसी भी प्रकार से हिन्दी सेवा कर रहे हों अथवा हिन्दी का प्रचार/प्रसार, हिन्दी के विकास के लिए कार्य कर रहे हों। **समाज सेवा के क्षेत्र में**: समदर्शी पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान-ऐसे व्यक्ति जो कम से कम गत 5 वर्षो से समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान दे रहे है. **कलाश्री**: (कला/संस्कृति/लोकनृत्य/शास्त्रीय संगीत/अभिनय/संगीत/पेंटिग, नृत्य आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए), **राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान/राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान** -(हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी अन्य क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण) (युवाओं की उम्र 35 वर्ष से कम हो) **विशेषः** १. प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित विधा की एक रचना, विवरण के सम्बंध में प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और 150 रुपये मात्र का धनादेश/डाक टिकट आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा. २.रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी. ३. निर्णायंक मण्डल का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा. किसी प्रकार के विवाद के सदर्भ में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा. अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

अंतिम तिथिः 30 नवम्बर 2019

अध्यक्ष,
श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति सेवा समिति
65ए/2, लक्सों कंपनी के सामने, रामचन्द्र मिशन रोड,
धूमनगंज, इलाहाबाद-211011, उ.प्र.,
मो०: 09335155949, ईमेल-psdiit@rediffmail.com

 # Me_Too की तरह, रिश्वतखोरी के खिलाफ़ भी ऐसी ही मुहिम की शुरूआत की जानी चाहिये. जिसमें लोग खुलकर बताएं कि उन्हें कब, कहाँ और किस अधिकारी/कर्मचारी/नेता को किस काम के लिए, रिश्वत देने के लिए मजबूर होना पड़ा. आज देश में, भ्रष्टाचार को उजागर करने की भी जरूरत है.

आगे बढ़ने के लिए जरुरी है ग़लतियों को स्वीकार करना

सीखने में ग़लतियाँ करना या होना स्वाभाविक है लेकिन उन पर अड़े रहना समझदारी नहीं. कुछ लोग अपनी ग़लती को फौरन स्वीकार कर लेते हैं जबकि अधिकांश लोग किसी भी सूरत में अपनी ग़लती स्वीकार नहीं करते. वे जानते हैं कि वे ग़लत हैं लेकिन मानेंगे नहीं. क्योंकि उनमें अपनी ग़लती स्वीकार करने का साहस ही नहीं होता.

-सीताराम गुप्ता, पीतमपुरा, दिल्ली

मोबाइल पर एक वाट्सएप संदेश मिला, 'ग़लती पीठ की तरह होती है. खुद के सिवाय बाक़ी सबको दिखती है।' ग़लतियों का मनुष्य के जीवन में बड़ा महत्त्व होता है. यदि हम ग़लतियाँ करना बिल्कुल छोड़ देंगे तो हम कुछ भी नहीं सीख पाएँगे या बहुत कम सीख पाएँगे. हम ग़लतियाँ करते हैं और उन्हें सुधारते हैं तभी जीवन में आगे बढ़ते हैं. सीखने में ग़लतियाँ करना या होना स्वाभाविक है लेकिन उन पर अड़े रहना समझदारी नहीं. वास्तव में अपने जीवन में हम उस स्तर तक ही पहुँच पाते हैं जिस स्तर तक अपनी ग़लतियों को समझकर उन्हें दूर कर लेते हैं या उनसे छुटकारा पा लेते हैं. यदि हम ग़लतियाँ नहीं कर रहे हैं तो इसका अर्थ है कि हम सीखने और सीखकर आगे बढ़ने का प्रयास ही नहीं कर रहे हैं. कुछ लोग ग़लतियों और अपराध में अंतर नहीं कर पाते अपितु दोनों को एक ही समझने की भूल करते हैं. अपराध ग़लती नहीं ग़लती से भिन्न अवस्था है.

जब हम कोई कार्य करते हैं और उसे ठीक ढंग से नहीं कर पाते तो वो ग़लती की श्रेणी में आता है. ग़लती अनुभव अथवा शिक्षा व प्रशिक्षण की कमी के कारण होती है जबकि नियम के विरुद्ध कार्य जिसे करने पर सज़ा का प्रवधान होता है वह अपराध कहलाता है. इस प्रकार से बड़ी से बड़ी ग़लती को भी अपराध नहीं माना जा सकता और छोटे से छोटे अपराध को भी ग़लती मानकर दण्ड से नहीं बचा जा सकता. प्रश्न उठता है कि क्या हम अपनी ग़लतियों को स्वीकार कर पाते हैं? लेकिन जब तक हम अपनी ग़लतियों को देख नहीं पाएँगे उन्हें कैसे दूर कर पाएँगे? कहा गया है कि ग़लती पीठ की तरह होती है. जिस प्रकार हम अपनी पीठ नहीं देख सकते उसी प्रकार हम प्रायः अपनी ग़लतियों को नहीं देख सकते.

हमारी पीठ हमारे अतिरिक्त सबको दिखलाई पड़ती है. उसी तरह हमारी ग़लतियाँ भी हमारे स्वयं के अतिरिक्त सभी देख सकते हैं. ये बात कुछ हद तक ही ठीक है पूर्णतः ठीक नहीं है. हम यदि अपनी ग़लतियों को देख नहीं सकते तो अनुभव तो कर ही सकते हैं. ये ठीक है कि हमें अपनी पीठ नहीं दिखलाई पड़ती लेकिन यदि हमारी पीठ पर खुजली होती है तो क्या वह अनुभव नहीं होती? क्या कोई दूसरा हमें बतलाता है कि आपकी पीठ पर खुजली हो रही है? क्या हम उसका उपचार नहीं करते? जब हम हेयर कटिंग के लिए जाते हैं तो वहाँ हमारे सामने आईना लगा होता है लेकिन हम उसमें अपना चेहरा और सिर के सामने के बाल तो देख पाते हैं लेकिन पीछे गुद्दी के बाल नहीं देख पाते. कटिंग के बाद कटिंग करने वाला हमें पीछे गुद्दी के बाल भी दिखा देता है और पूछता है कि कटिंग ठीक हुई या नहीं. इसके लिए वो एक दूसरे आईने का प्रयोग करता है. जब वो इसे हमारे सिर के पीछे की तरफ लगाता है तो उसका प्रतिबिंब सामने वाले आईने पर पड़ता है और हम अपने पीछे के बालों को भी अच्छी तरह से देख पाते हैं और यदि हमें कोई कमी नज़र आती है तो उसे बतलाकर सुधरवा लेते हैं. समाज हमारा उसी प्रकार का दर्पण है. हमारी ग़लतियों के संबंध में भी दूसरे लोग महत्त्वपूर्ण होते हैं. वे हमारा प्रायः सही मूल्यांकन करने में सक्षम होते हैं. ये अलग बात है कि हम उसे स्वीकार करते हैं या नहीं. यदि हम उसे स्वीकार करते हैं तो इससे हमारा ही फायदा होता है अन्यथा हम ही घाटे में रहते हैं. कई बार हमें अपनी ग़लतियों का पता नहीं चलता लेकिन प्रायः हमें अपनी ग़लतियों का अहसास हो जाता है लेकिन हम उन्हें स्वीकार करने में झिझकते हैं.

अपनी ग़लतियों को स्वीकार न करने के कई कारण हैं. कुछ लोग अपनी ग़लती को फौरन स्वीकार कर लेते हैं जबकि अधिकांश लोग किसी भी सूरत में अपनी ग़लती स्वीकार नहीं करते.

ग़लती अपराध नहीं है. ग़लती की स्वीकारोक्ति के बाद हम ग़लती के प्रभाव की पीड़ा से मुक्त हो जाते हैं. हम अपनी ग़लती रूपी बीमारी का इलाज समय पर कर सकते हैं.

वे जानते हैं कि वे ग़लत हैं लेकिन मानेंगे नहीं. वास्तव में उनमें अपनी ग़लती स्वीकार करने का साहस ही नहीं होता. फौरन अपनी ग़लती को मान लेना साहसी व्यक्ति का काम है. अपनी ग़लती मानकर हम साहस का ही परिचय देते हैं. कुछ लोग सोचते हैं कि ग़लती मान लेने से उनका अपमान होगा. लोग उनकी ग़लती के लिए उन्हें अपमानित करेंगे इसलिए चुप लगा जाते हैं. ये धारणा भी ग़लत है. ग़लती मान लेने से न तो किसी का स्वतः अपमान होता है और न ही दूसरे लोग उसे अपमानित करने का प्रयास करते हैं अपितु इससे उसकी ईमानदारी, सच्चाई व स्पष्टता झलकती है. ऐसे लोग अधिक सम्मान के पात्र बन जाते हैं.

राजनीतिक पार्टियाँ व राजनेता प्रायः अपनी ग़लतियाँ स्वीकार नहीं करते इसीलिए राजनीतिक पार्टियाँ व उनके बड़े से बड़े राजनेता लोगों के सम्मान के पात्र नहीं बन पाते. यदि अटल बिहारी बाजपेयी आज भी लोगों के सम्मान के पात्र हैं तो इसका सबसे बड़ा कारण है उनकी सच्चाई व ग़लती को फौरन मान लेने की योग्यता. हाँ अपनी ग़लती को स्वीकार कर लेना एक बहुत बड़ी योग्यता ही है. बड़े लोगों में ये योग्यता पाई जाती है. बड़े लोग फौरन अपनी ग़लती मान लेते हैं और जो लोग ग़लती होने पर फौरन अपनी ग़लती मान लेते हैं उन्हें बड़ा बनने से कोई नहीं रोक सकता. यदि हमें सचमुच बड़ा बनना है तो हमें अपनी ग़लतियाँ स्वीकार करने में देर नहीं करनी चाहिए. इसमें हम जितना विलंब करेंगे जीवन में उतनी ही देर से आगे बढ़ पाएँगे.

कई बार हमें लगता है कि अपनी ग़लती मान लेने से हम अपराधी सिद्ध हो जाएँगे. जैसा कि पहले स्पष्ट किया गया है कि ग़लती अपराध नहीं है और ग़लती की स्वीकारोक्ति के बाद हम ग़लती के प्रभाव की पीड़ा से मुक्त हो जाते हैं. हम अपनी ग़लती रूपी बीमारी का इलाज समय पर कर सकते हैं. हमारा मार्ग स्पष्ट हो जाता है कि अब हमें क्या करना है. ग़लती स्वीकार करने पर हमारा मार्ग अवरुद्ध नहीं होता अपितु अधिक प्रशस्त होता है. यहाँ से हमारे विकास की नई मंज़िल प्रारंभ होती है. कई बार हम अपनी ग़लती इसलिए भी नहीं मानते क्योंकि हमें अपनी ग़लती के लिए किसी न किसी प्रकार की क्षतिपूर्ति करनी पड़ती है. प्रायः लोग इस प्रकार की स्थिति से बचने के लिए अपनी ग़लती स्वीकार करने की बजाय दूसरों को इसके लिए उत्तरदायी ठहराने के प्रयास में लग जाते हैं. इससे प्रायः विवाद बढ़ जाता है. ग़लती मान लेने से विवाद बढ़ने की संभावना समाप्त हो जाती है.

लोगों अथवा समाज द्वारा ग़लतियों को अपराध जैसा बना देना भी ग़लतियों को स्वीकार करने में बाधक बनता है. बच्चे प्रायः अपनी ग़लती नहीं मानते क्योंकि इसमें उन्हें पिटने या डाँट खाने का भय होता है. इस संबंध में बच्चों के प्रति हमारा व्यवहार बहुत अधिक मित्रतापूर्ण होना चाहिए. ग़लती होने पर उन्हें डाँटने-डँपटने की बजाय प्यार से समझाया जाना चाहिए ताकि उन्हें ग़लती करके छुपाने की ज़रूरत न पड़े. जिन बच्चों में प्रारंभ से ही अपनी ग़लती स्वीकार करने की आदत पड़ जाती है या डाल दी जाती है वे आगे जाकर सचमुच बहुत अच्छे इंसान बनते हैं. कई माता-पिता बदनामी के डर से अपने बच्चें की ग़लतियों को स्वीकार करने की बजाय उन्हें छुपाने अथवा सही ठहराने का प्रयास करते हैं वे भी बहुत बड़ी ग़लती करते हैं. अपनी या अपने बच्चों की ग़लतियों को छुपाना बिल्कुल वैसा ही है जैसे अपनी बीमारी के लक्षणों अथवा घावों को छुपाना.

बीमारी हो अथवा ग़लती उसके लक्षणों अथवा घावों को छुपाने से उनका उपचार संभव ही नहीं और जब तक उपचार नहीं होगा हम चैन से नहीं बैठ सकेंगे. कुछ लोग साफ तौर पर तो कुछ लोग संकेतों के ज़रिए हमें हमारी ग़लतियाँ बतला देते हैं. फिर भी हम ये कहें कि हमें अपनी ग़लतियों का पता नहीं चलता तो ये बात किसी भी तरह से ठीक नहीं लगती. ये ग़लतियाँ स्वीकार कर उन्हें ठीक न करने का बहाना मात्र है. कुछ लोग इतना तर्क-वितर्क अथवा कुतर्क करते हैं कि लोग उनसे उनकी ग़लतियों की चर्चा न करना ही बेहतर समझते हैं. ये स्थिति तो हमारे लिए बहुत ही घातक हो सकती है. कुछ लोग हमारी ग़लतियाँ इसलिए बतलाते हैं कि इससे उन्हें परेशानी अथवा नुक़सान हो रहा होता है जबकि कुछ लोग इसलिए कि वे चाहते हैं कि हम सुधरें और आगे बढ़ें. यदि इस क्षेत्र में हम अपने शुभचिंतकों की बातों को गंभीरता से नहीं लेंगे तो हमारा ही नुकसान होगा.

भय, कानून का

-डॉ० विदूशी शर्मा, नई दिल्ली

आज बात करते हैं भय की, कानून के भय की. आज अखबार के मुख्य पृष्ठ पर ही यह खबर थी कि एक शख्स ने दूसरे शख्स को केवल गाड़ी ठीक से चलाने की नसीहत दी तो उन्होंने उसे गोली मार दी. उस इंसान की मदद को कोई नहीं आया. परिणाम, उसकी मौत मौत हो गई. (विनोद मेहरा, 48 वर्ष जी टी करनाल रोड भलस्वा फ्लाईओवर) घर से जब किसी की असामयिक मृत्यु हो जाती है तो उस परिवार पर क्या बीतती है, यह सब शब्दों में बयान कर पाना मुश्किल है क्योंकि यह ऐसा दर्द है जो उसके परिवार को, उस शख्स से जुड़े हर इंसान को जिंदगी भर झेलना पड़ता है. कई लोग यहां सोचेंगे कि यह खबर तो पुरानी है. तो हफ्ते, 10 दिन में किसी की जिंदगी नहीं बदलती. जिस घर से एक इंसान की मौत हुई है 10 दिन में उनका कुछ भी नहीं बदलता और जिंदगी की असलियत सामने आने लगती है. और खुदा ना खास्ता यदि वह इंसान पूरे घर का इकलौता ही कमाने वाला हो तो 10 दिन में नजारे दिखाई देने लग जाते हैं. कौन अपना है कौन पराया है, सब की पहचान हो जाती है. खैर यह बात हुई भावनाओं की. और भी तरह-तरह की खबरें देख कर मन बहुत उद्वेलित, खिन्न और परेषान हो जाता है. रोज़ ही अखबार इस तरह की खबरों से भरा पड़ा है. कहीं बलात्कार, कहीं डकैती, छोटी-छोटी बच्चियों की जिंदगी खराब हो रही है, घर के चिराग बुझ रहे हैं कहीं कमाने वाले जिस पर पूरे परिवार की जिम्मेदारी है उसी को मौत के घाट उतारा जा रहा है, बिना कुछ सोचे-समझे कि इसके बाद इसके परिवार का क्या होगा? यह सब देखकर दिल बहुत परेशान हो जाता है. मेरे मन में यह सब देख कर बहुत से सवाल खड़े हो जाते हैं. क्यों हमारे भारत में ही ऐसा सब कुछ है कि यह लोग एक जुर्म करने के बाद इतनी जल्दी दूसरा जुर्म करने को तैयार हो जाते हैं? क्यों उन्हें कानून का डर नहीं है? इतनी जल्दी लोग कानूनों का उल्लंघन क्यों करते हैं? चाहे वह 8 महीने की बच्ची से बलात्कार की घटना ही क्यों न हो?

नित नई खबरें रोज देखकर, पढ़कर मन परेशान हो जाता है. मैं यह नहीं कहती कि पुलिस अपना काम सही ढंग से नहीं कर रही. बल्कि आज ही अखबार में 2 दिन से लापता एक बच्चे को सुरक्षित निकालकर पुलिस ने एक परिवार को क्या दिया है, उस परिवार को क्या मिला है, यह शायद सिर्फ महसूस करने की चीज़ है. पुलिस, प्रशासन अपना काम कर रहे हैं. लेकिन अपराध, जुर्म और जनसंख्या इतना अधिक बढ़ते जा रहे हैं कि हम सब की भी जिम्मेदारी बनती है, अब कुछ करने के लिए. समाज को सुरक्षित करने के लिए हमें भी कुछ करना होगा.

जब तक कानून का डर नहीं होगा, तब तक कानून का पालन नहीं होगा. लोग जुर्म करने से जब तक डरेंगे नहीं, तब तक वह ऐसा करते रहेंगे. परंतु सवाल यह उठता है कि लोग आसानी से कोई भी अपराध इतनी जल्दी क्यों कर लेते हैं? क्योंकि हमारे यहां कानून में लोचशीलता है, सिस्टम में ढिलाई है, देरी है. इसलिए लोग इतने बेखौफ हैं.

बल्कि दूसरे देश में इतने कड़े नियम बनाए गए हैं और इतनी कड़ाई से नियमों का पालन भी किया और करवाया जाता है कि जबरदस्ती कानून और व्यवस्था बनी रहती है और धीरे-धीरे लोगों को इसकी आदत पड़ जाती है. हमारे यहां भारत में कानून का 'डर' होना चाहिए या यूं कहें कि कानून का आतंक होना चाहिए तभी अपराधों में कमी हो पाएगी. 'भय बिन होइ न प्रीति।'

कानून को कानून की तरह नहीं मानेंगे तो कुछ नहीं होने वाला. चाहे ट्रैफिक से संबंधित कानूनों से लेकर अपराधिक प्रकार के कानून ही क्यों न हो. मैं जानती हूं कि सब लोग इस बारे में बातें करते रहते हैं. परंतु बातें करने से कुछ नहीं होगा. सरकार को कानून सख्त बनाने होंगे. हम सब की भी कुछ जिम्मेदारी है. सब कुछ सरकार पर ही नहीं थोपना चाहिए और अपनी जिम्मेदारियों से पीछा नहीं छुड़ाना चाहिए. हम सब भी अपने स्तर पर कानून का दिल से पालन करें. और अपने बच्चों को शुरू से ही अनुशासन का महत्व बताएं (वरना इस उम्र में यदि कोई नसीहत दी जाएगी तो परिणाम घातक सिद्ध हो सकते हैं)।

इसलिए एक जिम्मेदार नागरिक होते हुए नई पीढ़ी को आरंभ से ही नैतिकता, अनुशासन, कानून का पाठ पढाना होगा.

सवाल राष्ट्र भाषा का?

राजनीति से परे विचार?

-डॉ० बालाराम परमार,
जम्मू कश्मीर

भारत को आजाद हुए सात दशक हो गए हैं लेकिन हिंदी को हृदय से राष्ट्र भाषा स्वीकार करने का सवाल ज्यों का त्यों बना हुआ है. राष्ट्र को एक भाग से दूसरे भाग तक जोड़ने के लिए सड़क एवं रेल मार्ग बन गए लेकिन भाशा के माध्यम से जोड़ने का मार्ग निर्माणाधीन ही है? जितना अधिक साहित्य में भाषाई एकता का बखान मिलाता है उतनी भाषाई एकता धरातल पर है नहीं. वास्तविकता कुछ और ही बयान करती है. पिछले दशकों में देश के अधिकांश क्षेत्रों में आशातीत एवं अतुलनीय प्रगतिशील कदम बढ़े-उठे हैं लेकिन जन-जन के हृदय को जोड़ने वाली राष्ट्र भाषा के सड़क-रेलमार्ग का शिलान्यास अभी बाकी है. ऐसा कहने-लिखने के अकाट्य कारण प्रमाण के साथ मौजुद भी है और सबको दिखाई भी देता है. बस जरुरत है अहिन्दी भाषा-भाषी राज्यों के वाशिंदों के हृदय से हिंदी भाषा के प्रति उनके मन में विद्वेष अथवा डर का भाव बना हुआ है उसे दूर करने का. पूर्वोत्तर राज्यों के वाशिंदों ने अनमने मन से ही सही, हिन्दी को हृदय में बसा लिया है. दक्षिण भारत के वाशिंदों के हृदय में हिंदी को स्वीकार करने में हिचकिचाहट और डर है. उन्हें डर है कि यदि हम हिंदी को बोलचाल की भाषा के रूप में अपनाते हैं तो हमारी अपनी प्रविड़ियन संस्कृति-सभ्यता, रहन-सहन तथा खान-पान पर प्रभाव पड़ेगा? इस प्रकार का सवाल एवं अस्वीकारोक्ति स्वाभाविक है और अपनी जगह सत्य भी!

क्योंकि हिंदी भाषा-भाषीयों द्वारा भी ऐसे संकेत नहीं दिए हैं कि वे भी द्रविड़ भाषा परिवार की भाषा-बोली को हृदय से आत्मसात करेंगें? यदि दक्षिण भारत के द्रविड़ भाषा-भाषी और उत्तर भारत में हिंदी भाषा-भाषी लोग राजनीति से परे राष्ट्रभाषा के सवाल का उत्तर खोजने में सफल होते हैं और हिंदी को वृहद राष्ट्रहित एवं भाषाई भेद-भाव व लड़ाई को समूल रूप में दफ़न करने के उद्देश्य से हृदयंगम करते हैं तो यह द्रविड़ भाषा परिवार के लोगों द्वारा आजादी के बाद का भारत माँ को दिया गया सबसे बड़ा और नायाब तोहफा निरुपित होगा.

असल में आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों, एक न एक दिन भारत की राष्ट्र भाषा तो होगी ही? देश तो देश है, युगों युगों तक एकता और अखंडता तो बनी ही रहेगी. देष में विकास की धारा तो बहेगी द्य नए-नए व्यक्तिगत, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक उन्नति के आयाम तो जुड़ेगें ही जुड़ेगें. एक भारत श्रेष्ठ भारत तो बनना-बनाना तय है. देश तो जन-जन का देश है. भारत देश न तो किसी धर्म का है न किसी वर्ग का? यह भारत न तो उत्तर भारत है न दक्षिण भारत? भारत तो भारतीयों का है. अब इस धरा पर 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' सोच की ही स्वीकार्यता, मान्यता एवं ग्राहम्यता होगी और होनी ही चाहिए. इस दृष्टिकोंण से राजनीति से परे विचार करें तो भारत में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप स्वीकार्यता कई मायने में महत्वपूर्ण है. भारतमाता को सबसे नायाब तोहफ़ा यह होगा कि उसकी संतान जो कई दसक से उत्तर-दक्षिण का कागरुसी राग अलाप रहें हैं, बंद कर 'हम सब भारतीय हैं' का एकता राग छेड़ना शुरू कर देगें. भाषा-प्रान्त का झगड़ा बंद तो विकास की गंगा-कावेरी अविरल धारा शुरु! विकास की धारा गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, हताशा, निराशा, अवसाद, दंगा-फसाद जैसी सब बिमारियों-लाचारियों को बहा कर गर्त में दफ़न कर देगी और नौजवानों में 'नया भारत, श्रेष्ठ भारत'; 'हमारा भारत, अतुल्य भारत'; 'भारतीयों का भारत, कर्मवीरों-धर्मवीरों का भारत' और 'अपना भारत, सारे जहां से अच्छा भारत' रचने, गढ़ने का ज़ोश भरेगी. असल में ऐसे ही भारत की कल्पना हमारे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की थी. हम १२५ करोड़ लोग अपने हिसाब से जिसे भी अपना अगुआ, हितेषी, मसीहा, उद्धारक, हमारी जाति - भाषा का, हमारे क्षेत्र का जिस किसी भी हिसाब से माने, उन सब की इच्छा और कामना यही थी कि हमारी आने वाली पीढ़ी सुखमयी जीवन जीये. दिन दुगुनी और रात चौगुनी उन्नति करे. अब वक्त आ गया है कि भारतवंशी ठण्डे दिमाग से राजनीति से परे विचार करें कि जिन्हें हम नित श्रध्दा-सुमन चढ़ाते हैं उनकी इच्छाओं का कितना आदर करते हैं? क्या यही हिंदी का देखा हुआ वह सपना है जो संविधान सभा ने देखा था?

हिन्दुओं में विवाह रात्रि में क्यों होने लगे?

सनातन धर्मी हिन्दू दिन के प्रकाश में ही शुभ कार्य करने का समर्थक हैं. फिर हिन्दुओं में रात में विवाह की परम्परा कैसे पड़ी?

क्या कभी आपने सोचा है कि हिन्दुओं में रात्रि को विवाह क्यों होने लगे हैं, जबकि हिन्दुओं में रात में शुभकार्य करना अच्छा नहीं माना जाता है?

रात को देर तक जागना और सुबह को देर तक सोने को, राक्षसी प्रवृति बताया जाता है. रात में जागने वाले को निशाचर कहते हैं.

केवल तंत्र सिद्धि करने वालों को ही रात्रि में हवन यज्ञ की अनुमति है.

वैसे भी प्राचीन समय से ही सनातन धर्मी हिन्दू दिन के प्रकाश में ही शुभ कार्य करने का समर्थक रहे हैं. तब हिन्दुओं में रात में विवाह की परम्परा कैसे पड़ी?

कभी हम अपने पूर्वजों के सामने यह सवाल क्यों नहीं उठाते हैं या स्वयं इस प्रश्न का हल क्यों नहीं खोजते है?

दरअसल भारत में सभी उत्सव एवं संस्कार दिन में ही किये जाते थे. सीता और द्रौपदी का स्वयंवर भी दिन में ही हुआ था.

प्राचीन काल से लेकर मुगलों के आने तक भारत में विवाह दिन में हुआ करते थे. मुस्लिम पिशाच आक्रमणकारियों के भारत पर हमले करने के बाद ही, हिन्दुओं को अपनी कई प्राचीन परम्पराएं तोड़ने को विवश होना पड़ा था.

मुस्लिम पिशाच आक्रमणकारियों द्वारा भारत पर अतिक्रमण करने के बाद भारतीयों पर बहुत अत्याचार किये गये. यह आक्रमणकारी पिशाच हिन्दुओं के विवाह के समय वहां पहुंचकर लूटपाट मचाते थे.

कामुक अकबर के शासन काल में, जब अत्याचार चरमसीमा पर थे, मुगल सैनिक हिन्दू लड़कियों को बलपूर्वक उठा लेते थे और उन्हें अपने आकाओं को सौंप देते थे.

भारतीय ज्ञात इतिहास में सबसे पहली बार रात्रि में विवाह सुन्दरी और मुंदरी नाम की दो बहनों का हुआ था, जिनकी विवाह दुल्ला भट्टी ने अपने संरक्षण में ब्राह्मण युवकों से कराया था.

उस समय दुल्ला भट्टी ने अत्याचार के खिलाफ हथियार उठाये थे. दुल्ला भट्टी ने ऐसी अनेकों लड़कियों को मुगलों से छुड़ाकर, उनका हिन्दू लड़कों से विवाह कराया.

उसके बाद मुस्लिम आक्रमणकारियों के आतंक से बचने के लिए हिन्दू रात के अँधेरे में विवाह करने लगे. लेकिन रात्रि में विवाह करते समय भी यह ध्यान रखा जाता है कि नाच-गाना, दावत, जयमाल आदि भले ही रात्रि में हो जाए लेकिन वैदिक मन्त्रों के साथ फेरे प्रातः पौ फटने के बाद ही हों.

पंजाब से प्रारम्भ हुई परंपरा को पंजाब में ही समाप्त किया गया. फिल्लौर से लेकर काबुल तक महाराजा रंजीत सिंह का राज हो जाने के बाद उनके सेनापति हरीसिंह नलवा ने सनातन वैदिक परम्परा के अनुसार दिन में खुले आम विवाह करने और उनको सुरक्षा देने की घोषणा की थी.

हरीसिंह नलवा के संरक्षण में हिन्दुओं ने दिनदहाड़े-बैंडबाजे के साथ विवाह शुरू किये.

तब से पंजाब में फिर से दिन में विवाह का प्रचलन शुरू हुआ. पंजाब में अधिकांश विवाह आज भी दिन में ही होते हैं. महाराष्ट्र एवं अन्य राज्य भी धीरे-धीरे अपनी जड़ों की ओर लौटने लगे हैं, हरी सिंह नलवा ने मुसलमान बने हिन्दुओं की घर वापसी कराई, मुसलमानों पर जजिया कर लगाया, हिन्दू धर्म की परम्पराओं को फिर से स्थापित किया.

सभी विवाह सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त ब्रह्ममुहूर्त में ही संपादित किये जाते हैं. ध्रुवतारा को स्थिरता के प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया जाता है जो ब्रह्ममुहूर्त में ही सबसे अच्छा दृष्टिगोचर होता है.

लेकिन साक्षी सूर्य के प्रतीक स्वरूप अग्नि को ही माना जाता है. इसीलिए अग्नि के ही फेरे लिए जाने की विधि है. लेकिन साक्षी सूर्य के प्रतीक स्वरूप अग्नि को ही फेरे लिए जाने की विधि है.

गायत्री परिवार में विवाह दिन में ही सम्पन्न किये जाते हैं...! कश्मीरी पंडित/हिन्दु लोग भी दिन में ही विवाह संस्कार सम्पन्न करते हैं.

सिख लोग, दक्षिण भारत के समस्त राज्यों में अधिकांशतः दिन में ही विवाह/पाणि ग्रहण संस्कार/कन्या दान सम्पन्न किया जाता है.

लेकिन उत्तर प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश एवं बिहार के लोग जबकि ४०० साल हो गए मुगल यहां से चले गये किन्तु आज भी उसे परंपरा मानकर चला रहे है! असल में हम गुलामी की मानसिकता से उबरना ही नहीं चाहते है!

आप सभी से विनम्र निवेदन है कि इस प्रथा पर आप सब एक बार अवश्य विचार करें।

लघु कथा प्रतियोगिता-2019

इस प्रतियोगिता में देशी-विदेशी कोई भी हिन्दी सेवी सहभागी हो सकता है। यह प्रतियोगिता तीन चरणों में सम्पन्न होगी। अंतिम चरण में सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागी को रुपये 5000/रुपये प्रदान किए जाएंगे। अंतिम चरण के सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिया जाएगा। सभी प्रतिभागियों की रचनाओं को पुस्तकाकार में प्रकाशित भी किया जाएगा। कृपया फोन कर जानकारी ना मांगे, अणुडाक(ई-मेल) या व्हाटस्एप पर आवेदन करें पूरा विवरण नियम एवं शर्तो सहित प्रेषित कर दिया जाएगा।

नियम एवं शर्ते

०१ प्रतिभागी को एक लघुकथा जिसकी शब्द सीमा अधिकतम ३००(तीन सौ शब्दों) से अधिक की न हो मौलिकता के प्रमाण पत्र के साथ भेजनी होगी।

०२ प्रथम चरण में इन लघुकथाओं को एक पुस्तकाकार में प्रकाशित किया जाएगा। जिसकी एक प्रति साधारण डाक से प्रतिभागी को भी भेजी जाएगी।

०३ पाठकों की राय के आधार पर सर्वश्रेष्ठ दस का चयन किया जाएगा। जो द्वितीय चरण के प्रतिभागी होगें।

०४ द्वितीय चरण के प्रतिभागियों की लघुकथा को विश्व स्नेह समाज मासिक के अंक में पुनः प्रकाशित किया जाएगा। जिसमें पाठकों की राय एवं तीन सदस्यीय निर्णायक मंडल के निर्णय के आधार पर सर्वोच्च एक का चयन किया जाएगा।

०५ विजेता को फरवरी २०१६ में आयोजित होने वाले १७वें साहित्य मेला के सुअवसर पर यह विजेता का प्रमाण पत्र व निर्धारित राशि प्रदान की जाएगी।

०६ प्रतिभागी को लघुकथा के साथ एक फोटो, नाम, पिता का नाम, जन्म तिथि, योग्यता तथा रुपये दो सौ का ध्‍ ानादेश/डीडी, अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी षाखा से **'सचिव विष्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा।

आवेदन की अंतिम तिथि 15 नवम्बर 2019

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,

६५ए/२, रामचन्द्र मिशन रोड, लक्सों कंपनी के सामने, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

सं0: 9335155949 sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

विशेषः कृपया मोबाइल पर संपर्क ना करें।

हिन्दीतर भाषी रचनाकारः

ॐ नमः शिवाय

-विजय कुमार सम्पत्ति,
सिकंदराबाद, तेलांगना

भाग-10 भगवान शिव

मुनिराज नारद ने कैलाश जाकर भगवान से कहा, 'महेश्वर आप को प्रणाम हैं! आप की प्राणप्रिय सती ने अपने पिता के घर आप की निंदा सुनकर क्रोध-युक्त हो यज्ञकुंड में अपने देह का त्याग कर दिया तथा यज्ञ पुनः आरंभ हो गया हैं, देवताओं ने आहुति लेना प्रारंभ कर दिया हैं.' भृगु के मन्त्र बल के प्रताप से जो प्रमथ बच गए थे, वे सभी भगवान शिव के पास गए और उन्होंने उन्हें उपस्थित परिस्थिति से अवगत करवाया.

नारद तथा प्रमथ गणो से यह समाचार सुनकर भगवान शिव शोक प्रकट करते हुए रुदन करने लगे, वे घोर विलाप करने लगे तथा मन ही मन सोचने लगे, 'मुझे इस शोक-सागर में निमग्न कर तुम कहा चली गई? अब मैं कैसे अपना जीवन धारण करूँगा? इसी कारण मैंने तुम्हें वहाँ जाने हेतु मना किया था, परन्तु तुम अपना क्रोध प्रकट करते हुए वहाँ गई तथा अंततः तुमने देह त्याग कर दिया.'

इस प्रकार के नाना विलाप करते हुए उन शिव के मुख तथा नेत्र क्रोध से लाल हो गए तथा उन्होंने रौद्र रूप धारण कर लिया. उनके रुद्र रूप से पृथ्वी के जीव ही क्या स्वयं पृथ्वी भी भयभीत हो गई. भगवान रुद्र ने अपने सर से एक जटा उखड़ी और उसे रोष पूर्वक पर्वत के ऊपर दे मारा, इसके साथ ही उनके ऊपर के नेत्रों से एक बहुत चमकने वाली अग्नि प्रकट हुई. उनके जटा के पूर्व भाग से महा-भयंकर, 'वीरभद्र' प्रकट हुए तथा जटा के दूसरे भाग से 'महाकाली' उत्पन्न हुई, जो घोर भयंकर दिखाई दे रहीं थीं.

'वीरभद्र' में प्रलय-काल के मृत्यु के समान विकराल रूप धारण किया, जिससे तीन नेत्रों से जलते हुए अंगारे निकल रहे थे, उनके समस्त शरीर से भस्म लिपटी हुई थीं, मस्तक पर जटाएं शोभित हो रहीं थीं.

उसने भगवान शिव को प्रणाम कर तीन बार उनकी प्रदक्षिणा की तथा हाथ जोड़ कर बोला 'मैं क्या करूँ आज्ञा दीजिये? आप अगर आज्ञा दे तो मैं इंद्र को भी आप के सामने ले आऊँ, फिर भले ही भगवान विष्णु उनकी सहायतार्थ क्यों न आयें.'

भगवान शिव ने वीरभद्र को अपने प्रमथों का प्रधान नियुक्त कर, शीघ्र ही दक्ष पुरी जाकर यज्ञ विध्वंस तथा साथ ही दक्ष का वध करने की भी आज्ञा दी. भगवान शिव ने उस वीरभद्र को यह आदेश देकर, अपने निश्वास से हजारों गण प्रकट किये. वे सभी भयंकर कृत्य वाले तथा युद्ध में निपुण थे, किसी के हाथ में तलवार थीं तो किसी के हाथ में गदा, कोई मूसल, भाला, शूल इत्यादि अस्त्र उठाये हुए थे. वे सभी भगवान शिव को प्रणाम कर वीरभद्र तथा महा-काली के साथ चल दिए और षीघ्र ही दक्ष-पुरी पहुँच गए.

इस तरह से भगवान शिव ने वीरभद्र तथा महा-काली को प्रकट कर उन्हें दक्ष के यज्ञ का विध्वंस कर उनकी वध करने की आज्ञा दी.

काली, कात्यायनी, ईशानी, चामुंडा, मुंडनर्दिनी, भद्र-काली, भद्र, त्वरिता तथा वैष्णवी, इन नौ-दुर्गाओं के संग महाकाली, दक्ष के विनाष करने हेतु चली. उनके संग नाना डाकिनियाँ, शकिनियाँ, भूत, प्रमथ, गुह्यक, कुश्मांड, पर्पट, चटक, ब्रह्म-राक्षस, भैरव तथा क्षेत्र-पाल आदि सभी वीर भगवान शिव की आज्ञानुसार दक्ष यज्ञ के विनाश हेतु चले. इस प्रकार जब वीरभद्र, महाकाली के संग इन समस्त वीरों ने प्रस्थान किया, तब दक्ष के यह देवताओं को नाना प्रकार के विविध उत्पात तथा अपशकुन होने

लगे. वीरभद्र के दक्ष यज्ञ स्थल में पहुँच कर समस्त प्रमथों को आज्ञा दी! यज्ञ को तत्काल विध्वस्त कर समस्त देवताओं को यहाँ से भगा दो, इसके पश्चात सभी प्रमथ गण यज्ञ विध्वंसक कार्य में लग गए.

इस कारण दक्ष बहुत भयभीत हो गए और उन्होंने यज्ञ संरक्षक भगवान विष्णु से यज्ञ की रक्षा हेतु कुछ उपाय करने का निवेदन किया. भगवान विष्णु ने दक्ष को बताया कि उससे बहुत बड़ी भूल हो गई हैं, उन्हें तत्व का ज्ञान नहीं हैं, इस प्रकार उन्हें देवाधिदेव की अवहेलना नहीं करनी चाहिये थीं. उपस्थित संकट को टालने में कोई भी सक्षम नहीं हैं. शत्रु-मर्दक वीरभद्र, भगवान रुद्र के क्रोधाग्नि से प्रकट हुए हैं, इस समय वे सभी रुद्र गणो के नायक हैं एवं अवश्य ही इस यज्ञ का विध्वंस कर देंगे. इस प्रकार भगवान विष्णु के वचन सुनकर दक्ष घोर चिंता में डूब गए. तदनंतर, शिव गणो के साथ देवताओं का घोर युद्ध प्रारंभ हुआ, उस युद्ध में देवता पराजित हो भाग गए. शिव गणो ने यज्ञ स्तूपों को उखाड़ कर दसों दिशाओं में फेंका और हव्य पात्रों को फोड़ दिया, प्रमथों ने देवताओं को प्रताड़ित करना प्रारंभ कर दिया तथा उन्होंने देखते ही देखते उस यज्ञ को पूर्णतः विध्वस्त कर दिया. इस पर भगवान विष्णु ने प्रमथों से कहा! 'आप लोग यहाँ क्यों आयें हैं? आप लोग कौन हैं? शीघ्र बताइये.'

इस पर वीरभद्र ने कहा, 'हम लोग भगवान शिव की अवमानना करने के कारण इस यज्ञ को विध्वंस करने हेतु भेजे गए हैं.' वीरभद्र ने प्रमथों को आदेश दिया कि कही से भी उस दुराचारी शिव से द्वेष करने वाले दक्ष को पकड़ लायें. इस पर प्रमथ गण दक्ष को इधर उधर ढूंढने लगे, उनके रास्ते में जो भी आया उन्होंने उसे पकड़ कर मारा-पिटा. प्रमथों ने पूषाको पकड़ कर उसके दांत तोड़ दिए और अग्नि-देवता को बलपूर्वक पकड़ कर जिह्वा काट डाली, अर्यमा की बाहु काट दी गई, अंगीरा ऋषि के ओष्ट काट डाले, भृगु ऋषि की दाड़ी नोच ली. उन प्रमथों ने वेद-पाठी ब्राह्मणों को कहा! आप लोग डरे नहीं और यहाँ से चले जाइए, अपने आप को अधिक बुद्धिमान समझने वाला देवराज इंद्र मोर का भेष बदल उड़कर वह से एक पर्वत पर जा छिप बैठ गया और वही से सब घटनाएँ देखने लगा.

उन प्रमथ गणो द्वारा इस प्रकार उत्पात मचने पर भगवान विष्णु ने विचार किया, 'मंदबुद्धि दक्ष ने शिव से द्वेष वश इस यज्ञ का आयोजन किया, उसे अगर इसका फल न मिला तो वेद-वचन निष्फल हो जायेगा. शिव से द्वेष होने पर मेरे साथ भी द्वेष हो जाता हैं, मैं ही विष्णु हूँ और मैं ही शिव! हम दोनों में कोई भेद नहीं हैं. शिव का निंदक मेरा निंदक हैं, विष्णु रूप में मैं इसका रक्षक बनूँगा तथा शिव रूप में इसका नाशक. अतः मैं कृत्रिम भाव से दिखने मात्र के लिए युद्ध करूँगा और अन्तः में हार मान कर रुद्र रूप में उसका संहार करूँगा. यह संकल्प कर उन शंख चक्र धारी भगवान विष्णु ने प्रमथों द्वारा किये जा रहे कार्य को रोका, इस पर वीरभद्र ने विष्णु से कहा! 'सुना हैं आप इस महा-यज्ञ के रक्षक हैं, आप ही बताये वह दुराचारी, शिव निंदक दक्ष इस समय कहाँ छिपा बैठा हैं? या तो आप स्वयं उसे लाकर मुझे सौंप दीजिये या मुझ से युद्ध करें। आप तो परम शिव भक्त हैं, परन्तु आज आप भी शिव के द्वेषी से मिल गए हैं.'

भगवान विष्णु ने वीरभद्र से कहा! 'आज मैं तुम से युद्ध करूँगा, मुझे युद्ध में जीतकर तुम दक्ष को ले जा सकते हो, आज मैं तुम्हारा बल देखूंगा' यह कहा कर भगवान विष्णु ने गणो पर धनुष से बाणों की वर्षा की जिसके कारण बहुत से गण क्षत-विक्षत होकर मूर्छित हो गिर पड़े. इसके पश्चात भगवान विष्णु तथा वीरभद्र में युद्ध हुआ, दोनों ने एक दूसरे पर गदा से प्रहार किया, दोनों में नाना अस्त्र-शस्त्रों से महा घोर युद्ध हुआ. वीरभद्र तथा विष्णु के घोर युद्ध के समय आकाशवाणी हुई. वीरभद्र! युद्ध में क्रुद्ध हो तुम आपने आप को क्यों भूल रहे हो? तुम जानते नहीं हो की जो विष्णु है वही शिव हैं, इनमें किसी प्रकार का भेद नहीं हैं.

तदनंतर, वीरभद्र ने भगवान विष्णु को प्रणाम किया तथा दक्ष को पकड़ कर बोला, 'प्रजापति जिस मुख से तुमने भगवान शिव की निंदा की हैं मैं उस मुख पर ही प्रहार करूँगा. वीरभद्र ने दक्ष के मस्तक को उसके देह से अलग कर दिया तथा अग्नि में मस्तक की आहुति दे दी एवं जो शिव निंदा सुनकर प्रसन्न होते थे उनके भी जिह्वा और कान कट डाले.

क्रमशः.....

अगले अंक की परिचर्चा
प्रिंट मीडिया और उसकी उपयोगिता

अगर तुम नहीं मिलते

अगर तुम नहीं मिलते मुझको
मन की साध कुंवारी होती।
कली हृदय की खिली न होती
यह उदास फुलवारी होती।

अगर चाँदनी नहीं बरसती
उगे हुए अंकुर कुम्हलाते।
सृजन अधूरा ही रह जाता
गीत विरह के गाये जाते।
अगर दीया तुम नहीं जलाते
रात न ये उजियारी होती।
अगर तुम नहीं मिलते मुझको
मन की साध कुंवारी होती।

मन की मेरे झिझक न मिटती
पाँव थिरकने से रह जाते।
आँगन सूना ही रह जाता
मंगल गीत रचे नहीं जाते।
जीवन भर साँसों के ऊपर
तम की पहरेदारी होती।
अगर तुम नहीं मिलते मुझको
मन की साध कुंवारी होती।

नृत्य न होता तुम बिन जीवन
तुम बिन जीवन गीत न होता।
जीवन क्या है बिना तुम्हारे
उसका मर्म प्रतीत न होता।
बिना तुम्हारे जीवन जीना
ज़ीने की लाचारी होती।
अगर तुम नहीं मिलते मुझको
मन की साध कुंवारी होती।

-**आचार्य बलवन्त,** बेंगलुरु, कर्नाटक

जय भारत

जय भारत मिनी जगत,
शांत का संरक्षक/धरती थी छवि न्यारी,
महादानी स्वाभिमानी
प्राणी सात का अन्नदाता,
दूसरों के लिए निछावर
अपनी जीवन-यात्रा,
निःसहायों को पनाह देने
करता अव्वल कर्म
भेद भाव मिटा कर सब का
निभाता सेवा धर्म
पढ़ाई लिखाई में सदा निरत
करता भूल सुधार
समाज की तरक्की करना
मंजिल मिटाना अंधार
नव जागरण स्नेह का बंधन
करेगा हिंदुस्तान/शिख इसाई हिन्दू भाई
जैन बौद्ध मुसलमान
सहवस्थान में मिलाजुल हो कर
देश में लाएँगें क्रांति
अन्याय अत्याचार मिटाएगे
सबको मिले सम्मति।
तिरंगा लहरेगा हमेशा
आसमान में चार चाँदे,
दुश्मन भी बदला जाएँगें हमारे
टूट जाएगी उनकी नींद
दोस्ती केक हाथ पकड़ेगे हमारे
तोबा करके संशोधन/शैतानी को हटाए देगे
ईशु राम रहिमन
एक ही संस्कार भिन्न अवतार
बनाएंगे सच्चा इन्सान
आओ सब भारत के वासी मिलकर
करेगे नव निर्माण।।
बढ़ेगी शोहरत जीवन अमृत
मिलगयी गंगा कावेरी,
जय भारत मिनी जगत
शांत अहिंसा क्रान्ति कारी,
धरती की छवि न्यारी।।

-श्री हरिहर चौधरी,
हिंजिफि काटु ओडिसा

दोस्त

कभी खुशी कभी गम मिलेंगे
स्वार्थी लोग तो हरदम मिलेंगे
यकीन नहीं तो आजमा के देखो
रोशनी में भी अक्सर हम मिलेंगे
अगर भावना शुद्ध रही तो
अंत में तुम्हें प्रियतम मिलेंगे
होली पर न मिल पाए साजन
गोरी के दो नयना नम मिलेंगे
चाहत हो मिलने की अगर
प्रभु कृपा से हमेशा हम मिलेंगे
साले की शादी में गर पहुचे तो
रस गुल्ले और चमचम मिलेंगे
जिधर देखो उधर हमकों यादव
बस बन्दूक, गोले बम मिलेंगे।

परिवर्तन

रेत में फूल खिलाकर देखो
शत्रु से हाथ मिलाकर देखो
कुछ भी कठिन नहीं हैं जग में
इन्द्रासन भी हिलाकर देखो
तूफानों से अब क्या घबराना
एक नन्हा सा दीप जलाकर देखो
समय पर काम वही आयेगा
प्रभु से प्रीत निभाकर देखो
हंसी खेल नहीं ये जीवन
कष्टों में भी मुस्कुराकर देखो
कुंभकरण की नींद में सोया है
हिम्मत है तो उसे जगाकर देखो
अपने आप ही डर के भागेगा
दुश्मन से जरा टकराकर देखो
हदय परिवर्तन भी हो जाएगा
बस अपने गले लगाकर देखो

-रामचरन यादव, बैतूल, म.प्र.

मुक्तकबन्द

करेंगे क्या ये चारागर, जो इक बीमार कर लेगा
दिखावे की ही सूरत में, कोई जो प्यार कर लेगा
यक़ीनन भूखों मरने के, जुटाता है वो खुद सामां
जो अपनी हसरतों को बस, महज़ खुद्दार कर लेगा
नई नस्लों के, कुत्ते भी, नहीं चाटेंगे, तलवे ये
चमकते चांद, से तलवों का, जो क़िरदार कर लेगा
खुशामदख़ोर है दुनिया, विधाता की वही जाने
इसी के दम पर है संभव, कि कारोबार कर लेगा
बिना उसकी इजाज़त के, कहीं पत्ता नहीं हिलता
खबर है किसको क्या कल की? कब अवतार कर लेगा
गुरूड़,, पुष्पक और ऐरावत, बुलाते रह गये ऊपर
'समीर' चलते हुये पैदल, उमर बेकार कर लेगा।

-पं० **मुकेश चतुर्वेदी 'समीर'**, सागर, म.प्र.

गीत

धरती अम्बर करते हैं गुनगान शहीदों का।
कैसे भूलेगा यह देश ऐहसान शहीदों का।
जिन्होंने अर्पण कर दी अपने देश के हेतु जवानी।
जिन्होंने कारागार के तम से कभी हार न मानी।
जिन्होंने फाँसी की रस्सी भी ज़ुल्फ़ यार की जानी।
सागर भी था जिनके वास्ते घुटने घुटने पानी।
कभी व्यर्थ नहीं जाता बलिदान शहीदों का।
कैसे भूलेगा यह देश ऐहसान शहीदों का।
कितने भाई छीन ले गयी वो खूनी बैसाखी।
कितनी बहिनों के हाथों में रही सिसकती राखी।
कितनी माताओं ने दे दी बेटों की कुर्बानी।
इसको भूल नहीं पायेगा यह सतलूज का पानी।
अपने देश की आज़ादी है दान शहीदों का।
कैसे भूलेगा यह देश ऐहसान शहीदों का।
सभी बाराती दूल्हे जैसे सभी के सर पर सेहरे।
मन में आग ली है ऐसी चमक रहे हैं चेहरे।
हथकड़ियों के साज़ बज रहे रणचण्डी का गाना।
लाने चले मौत की दुल्हन पहन केसरी बाना।
खून से सजक र आया है फलदान शहीदों का।
कैसे भूलेगा यह देश एहसान शहीदों का।

-**सरदार पंछी**, खन्ना, पंजाब

तेवरी छंद

01

पूँजीवादी चौंटे, कुछ दिन खुश हो लें करकेंटे
जनवादी चिन्तन की खिल्ली चार दिनों की है।
राजनीति के हउआ, कुछ दिन मौज उड़ालें कउआ
सत्ता-मद में डूबी दिल्ली चार दिनों की है।
ओढ़े टाट-बुरादा, फिर भी ऐसे जिये न ज्यादा
गलती हुई बरफ की सिल्ली चार दिनों की है।
अब घूमेगा डंडा, इसकी पड़े पीठ पर कंडा
दूध-मलाई चरती बिल्ली चार दिनों की है।
कांपेंगे मुस्तंडे, अब अपने हाथों में डंडे
जन की चाँद नापती गिल्ली चार दिनों की है।
शोषण करती तोंदें, कल संभव है शोषित रौंदें
फूलते गुब्बारे की झिल्ली चार दिनों की है।

02

त्यागी वे चौपालें, मन की व्यथा जहाँ बतिया लें
अब तो चिलम-'बार के हुक्का' हमको प्यारे हैं।
नूर टपकता हरदम, उन बातों से दूर हुए हम
लुच्चे लपका लम्पट फुक्का हमको प्यारे हैं।
हर विनम्रता तोड़ी, हमने रीति अहिंसक छोड़ी
गोली चाकू घूँसा मुक्का हमको प्यारे हैं।
कोकक्रिया के अंधे, हमने काम किये अति गन्दे
गली-गली के छिनरे-लुक्का हमको प्यारे हैं।
धर्म-जाति के नारे, यारो अब आदर्श हमारे
सियासी धन-दौलत के भुक्का हमको प्यारे हैं।

03

बदले सोच हमारे, हम हैं कामक्रिया के मारे
अबला जिधर चले इक छिनरा पीछे-पीछे है।
दालें भरें उछालें, कैसे घर का बजट सम्हालें
मूँग-मसूड़-उड़द के मटरा पीछे-पीछे है।
देखा दाना बिखरा, चुगने बैठ गयी मन हरशा
चिडिढ या जान न पायी पिंजरा पीछे-पीछे है।
मननी ईद किसी की, कल चमकेगी धार छुरी की
कसाई आगे-आगे बकरा पीछे-पीछे है।
साधु नोचता तन को, कलंकित करे नारि-जीवन को
अंकित करता 'रेप' कैमरा पीछे-पीछे है।
आज जागते-सोते, हम अन्जाने डर में होते
लगता जैसे कोई खतरा पीछे-पीछे है।

-**रमेशराज**, अलीगढ़, उ०प्र०

कहानी

बेटे की तमन्ना

-कृष्ण कुमार यादव,
निदेशक डाक सेवाएँ मुख्यालय,
लखनऊ, उ.प्र

रात के करीब एक बजेकृक् चारों तरफ सन्नाटा कृक् कभी-कभी कुछ कुत्तों की कूं-कूं सुनाई देती या झोपड़ियों के बाहर सो रहे लोगों के खर्राटों की आवाज. गाँव की दलित बस्ती के अंतिम छोर पर स्थित झोपड़े में से लालटेन का मद्धिम प्रकाश छनकर बाहर आने की कोशिश कर रहा था. झोपड़े के अन्दर जमीन के एक कोने में लेटी स्त्री अचानक प्रसव-पीड़ा से कराह उठी. उसके पूरे बदन में ऐंठन होने लगी. उसकी पीड़ा और कराह सुनकर उसकी सास माँ जो कि उसके पहले से ही जने गये चार बेटियों को लेकर सो रही थी उठकर उसके करीब आ गयी. इस बार अपनी बहू की पुत्र रत्न प्राप्ति के प्रति वह आश्वस्त थी. उसने तमाम देवी-देवताओं के दर्शन करने और मन्नत मानने से लेकर अपनी बहू को गाँव के पुरोहित और ओझा से भी बेटा होने का आशीर्वाद दिलाया था. इसके बदले में उसने पुरोहित और ओझा को पचीस-पचीस रूपये भी दिये थे. यद्यपि वह लगातार चार वर्ष से बहू की पुत्र-प्राप्ति हेतु सब जतन कर रही थी, पर अभी तक भगवान ने उसकी नहीं सुनी थी.

चारों बेटियाँ घर में किसी नये सम्भावित सदस्य के आगमन से बेखबर सो रही थीं. घर का मर्द दिन भर कड़ी मेहनत के बाद एक गिलास कच्ची दारू पीकर बेसुध खर्राटे भरी नींद ले रहा था. उसका इस बात से कोई मतलब नहीं था कि उसका एक अंश आज कहीं बाहर आने को उत्सुक हो रहा है. चार बेटियों की प्राप्ति के बाद उसने भी पुत्र प्राप्ति की आशा छोड़कर सब कुछ भगवान के भरोसे छोड़ दिया था. उसे तो शायद यह भी नहीं पता कि आने वाला नन्हा जीव, दारू के नशे में धुत बीबी के साथ किये गये किस दिन के प्यार की निशानी है. जब भी वह रात को सोता तो सपने देखता कि उसका एक बेटा है, जो उसके काम में हाथ बँटा रहा है. जब वह सिर पर मिट्टी रखकर फेरे लगाते थक जाता तो थोड़ी देर किसी पेड़ की छाया में बैठकर बीड़ी का सुट्टा लगाता कि तभी ठेकेदार की कड़क आवाज आती- 'क्या बे कामचोर! पैसे तो दिन भर के लेता है तो काम क्या तेरा बाप करेगा?' तब उसे लगता कि काश उसका कोई बेटा होता तो कभी-कभी वह उसे अपनी जगह भेजकर घर पर आराम करता. पर यह पेट भी बहुत हरामी चीज है जो हर कुछ बर्दाश्त करने की ताकत देता है.

एक दिन उसने टेलीविजन में देखा था कि प्रधानमंत्री पूरे देश में सड़कों का जाल बिछाने की घोषणा कर रहे थे और इससे हर साल करीब एक करोड़ रोजगार पैदा होने की बात कर रहे थे. कुछ ही दिनों बाद उसने देखा कि गाँव के बाहरी छोर पर एक बड़ा सा गड्ढा खोदा जा रहा है. पूछने पर पता चला कि उसका गाँव भी प्रधानमंत्री जी की घोषणा के अन्तर्गत जल्दी ही सड़क से शहर द्वारा जुड़ जायेगा. ठेकेदार मिट्टी के पूरे पैसे तो सरकार से लेता पर गाँव वालों को आँख तरेरता कि अगर अपने खेतों से मिट्टी मुफ्त में नहीं दोगे तो सड़क कैसे बनेगी. ये ऊँचे-नीचे गड्ढे भरने के लिए तो तुम्हें मिट्टी देनी ही पड़ेगी. गाँव वाले भी सड़क के लालच में शहर जाने की सुविधा हो जाने के चक्कर में अपने खेतों से ठेकेदार को मुफ्त में मिट्टी लेने की अनुमति दे देते. ठेकेदार के आदमी रोज दिहाड़ी पर काम करने वालों की सूची बनाते और अपना

कमीशन काटकर शाम को उनकी मजदूरी थमा देते. उसने भी ठेकेदार के आदमियों के हाथ-पाँव जोड़कर किसी तरह काम पा लिया था और उन एक करोड़ लोगों में शामिल हो गया था, जिन्हें उस साल रोजगार मिला था. वह रोज सोचता कि अगर उसका कोई बेटा होता तो ठेकेदार के आदमियों के हाथ-पाँव जोड़कर उसका भी नाम सूची में लिखवाकर काम पर लगवा देता. वैसे भी काम मिले तो नाम से क्या मतलब? वह यह जानता था कि ठेकेदार के आदमी भले ही उसे हर रोज मजदूरी का पैसा देते हैं, पर कुछ दिनों के अन्तराल पर उसकी जगह कोई दूसरा नाम लिख देते हैं. धीमे-धीमे वह भी सरकार के एक करोड़ रोजगार का राज समझने लगा था. पर इससे उसे क्या फर्क पड़ता है, उसे तो बस मजदूरी से मतलब है.

एक दिन पंचायत भवन में लगे टेलीविजन में उसने देखा कि नयी सरकार हेतु अब फिर से वोट डाले जाने वाले हैं. टेलीविजन में बड़े-बड़े विज्ञापन दिखाये जा रहे थे, जिसमें गाँव को शहरों से जोड़ने वाली चमचमाती सड़क दिखायी गयी थी. वह बहुत देर तक सोचता रहा कि अभी तो अपने गाँव वाली सड़क बनी भी नहीं, फिर इसके फोटू टेलीविजन पर कैसे आ गये. उसने शहर से कमाकर लौटे एक नौजवान लड़के से इसके बारे में पूछा तो पहले तो उसने सिगरेट का पूरा धुंआ उसके मुँह पर दे मारा और फिर हँसता हुआ बोला-गंवार कहीं के! तेरे को बार-बार समझाता हूँ कि मेरे साथ शहर कमाने चल, थोड़ा वहाँ की दुनिया का भी रंग-ढंग देख. पर तेरे को बच्चा पैदा करने से फुर्सत मिले तो न? करीब पन्द्रह मिनट शहर के बारे में अपने शेखी बघारने के बाद उसने बताया कि जैसे टेलीविजन देश-दुनिया की हर खबर को दिखाता है, वैसे ही इससे भी नई एक मशीन कम्प्यूटर होती है जो जिस चीज को जैसे चाहो, वैसे बनाकर दिखा देती है. बात उसके पल्ले पड़ी तो नहीं पर वह मानो समझ गया के लहजे में सर हिलाकर घर की तरफ चल दिया. वह तो चाहता था कि ज्यादा दिन तक सड़क बने ताकि उसे ज्यादा दिन तक काम मिल सके.

गाँव में पहले छुटभैया नेताओं और फिर चमचमाती कारों व जीपों के काफिले में बड़े नेताओं के दौरे आरम्भ हो गये थे. हर कोई गरीबी और भुखमरी मिटाने की बात कहता. जिस पार्टी का नेता आता हर घर पर उसी के झण्डे और बैनर दिखते. शाम को नुक्कड़ वाली चाय की दुकान में दिन भर नेता जी के पीछे दौड़ने और भीड़ जुटाने के एवज में मिली सहायता राशि से पीने-पिलाने का दौर शुरू होता. इधर ठेकेदार के आदमियों ने मजदूरी में से ज्यादा कमीशन काटना आरम्भ कर दिया, यह कहकर कि चुनाव में खाने-पीने का खर्चा कौन देगा? शाम को वह काम से लौटा तो देखा पंचायत भवन में भीड़ जुटी हुयी है. एक बाहरी सा दिखने वाला आदमी लोगों को बता रहा था कि अब मशीन से वोट पड़ेगा. जब मशीन की बटन दबाओगे और पीं बोलेगा तो समझना वोट पड़ गया.

चुनाव खत्म हो चुका था. एक दिन उसने देखा कि कोई नया ठेकेदार और उसके आदमी आये हैं. वह बहुत खुश हुआ क्योंकि पुराना ठेकेदार तो बहुत जालिम था. एक मिनट भी सुस्ताने बैठो तो गालियों की बौछार कर देता था. पर वह आश्चर्यचकित भी था कि ठेकेदार का तो इतना रौब था, फिर उसे कैसे हटा दिया गया? शाम को घर लौटते समय पंचायत भवन मे लगे टेलीविजन के पास भीड़ देखकर वह भी ठिठक गया. टेलीविजन पर एक खूबसूरत महिला जिन्दाबाद के नारों के बीच बोल रही थी कि- 'जनता अब परिपक्व हो चुकी है. उससे अपना वोट पिछली सरकार के विरूद्ध देकर हमारी पार्टी को सरकार बनाने का जनादेश दिया है.' पंचायत भवन में ही उसने सुना कि उसके इलाके से कोई नये सांसद चुने गये हैं और नया ठेकेदार उन्हीं का आदमी है. घर लौटते समय रास्ते भर वह अपनी अंगुली पर मतदान की निशानी के रूप में लगी स्याही को ध्यान से देखता रहा. एक बार तो उसने स्याही को सूंघकर उसकी गंध को समझने की भी कोशिश की, पर उसमें वह किसी भी गंध को न पा सका. उसे ताज्जुब हो रहा था कि इसी अंगुली से बटन दबाने

से सरकार भी बदल जाती है. खैर, उसे दिल्ली में बैठी सरकार से क्या लेना-देना? वह तो यही सोचकर खुश था कि उसने अंगुली से जो बटन दबाई, वह पुराने ठेकेदार को हटाने में एक महत्वपूर्ण कारण है.

झोपड़े के अंदर उस स्त्री की प्रसव-पीड़ा और भी तेज हो चली थी. उसकी सास माँ उसके पेट पर तेजी से हाथ सहलाने लगी थी और सोच रही थी कि बहू की पुत्र-रत्न प्राप्ति के बाद वह किस मन्दिर में जाकर सबसे पहले सर नवायेगी. अचानक स्त्री पूरी तरह कराह के साथ छटपटा उठी और एक नव जीवन का पृथ्वी पर आविर्भाव हुआ. सास माँ ने तेजी से लालटेन लेकर गौर से नवजात शिशु का मुआयना किया तो उसका दिल धक से रह गया. उसकी सारी मनौतियों के बावजूद उसकी बहू के गर्भ से फिर एक बेटी का जन्म हुआ था. अपनी मनौतियों का ऐसा तिरस्कार वह नहीं बर्दाश्त कर पायी और यह भूलकर कि उसकी बहू ने अभी प्रसव-वेदना से मुक्ति पायी है, उसे डायन व तमाम आरोपों से नवाजने लगी. इन सबसे बेखबर माँ ने शिशु को अपने बदन से चिपका लिया, ऐसा लगा मानो उसकी सारी पीड़ा शिशु के बदन की गर्मी पाते ही छू-मंतर हो गयी.

पति ने नींद में ही बड़बड़ाते हुए अपनी माँ को शोर न मचाने का आदेश दिया. दारू का नशा अभी भी नहीं उतरा था. अपने अंश के आविर्भाव से अपरिचित वह सपने में देख रहा था कि उसका गाँव शहर से चमचमाती सड़क द्वारा जुड़ गया है. वह एक सम्पन्न किसान बन गया है और अपने बेटे को ट्रैक्टर पर बिठाकर अनाज बेचने शहर की तरफ जा रहा है.

ये आग कब बुझेगी

एक प्रश्न

'यह आग कब बुझेगी'' जैसे विशाल प्रश्न की कड़ी कभी अंतिंम नहीं हो सकती! जिस दिन इस कड़ी का आखिरी दिन होगा, उसी दिन भारत की धरती पर गांधी जी का स्वराज्य जन्म लेगा।

इस प्रश्न का प्रहार सदैव अपनी दृढ़ता के साथ जीवित रहना चाहिये!

जब भी कभी नारी की अस्मिता दम तोड़ने लगे, और यह समाज-गूंगा हो जाये। साथ-साथ हमारी न्यायिक व्यवस्था अंधी और बहरी हो जाये, तब-तब इस प्रश्न का प्रहार अत्यंत ज्वलन-शीलता के साथ समाज के ठेकेदारों के विवेकहीन मस्तक पर होना चाहिये।

संस्कारों का पतन आज हमारे युवा पीढ़ी की नैतिकता बन गया!

उदाहरणार्थ

जब वृद्ध माता-पिता वृद्धा आश्रम की छत को धूरे तब इस प्रश्न का जागरण होना चाहिये जब हम अपनी प्रणाम की सभ्यता हाय! हैलो! में परिवर्तित करें! तब भी यह प्रश्न जागृत होना चाहिये।

और इस प्रश्न की रूचि जागृति तो भी सार्थक होगी जब हम उस नन्ही सी जान का स्वागत खुले मन से करें जिसे हम जन्म के पूर्व ही मार देते हैं। मैं सच कहती हूँ, यदि ऐसे ही कोख में बेटियों का हनन होता रहा तो तुम तरस जाओगे, बहन की मीठी मनुहार को तुम तरस जाओगे धैर्यशील मां को और पत्नी की समर्पित भावना को। और यह आज का जलता हुआ सच कि तुम तरस जाओगे उन सारे रिश्ते को जो एक नन्ही कोपल की किलकारी से शुरू होती हैं। और तुम स्वयं ही अपने हृदय की चौखट पर दस्तक देते हुये यह प्रश्न करोगें कि **''यह आग कब बुझेगी''**

-श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली', रायबरेली, उ. प्र.

संपादक के नाम पाती

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखो पर अपने विचार या कोई सुझाव नीचे दिये गये ई-मेल आईडी पर भेज सकते है। स्थान की उपलब्धता के हिसाब से हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।
vsnehsamaj@rediffmail.com

-संपादक

सम्मानित पाठकों अपनी प्रतिक्रियाओं, शिकायतों, सुझावों से हमें अवगत कराते रहे ताकि पत्रिका को निखारने, उपयोगी बनाने में हमें मिल सके.

धन्यवाद। संपादक

कहानी

पहला कदम

✍ पवित्रा अग्रवाल,
हैदराबाद, तेलांगना

भाग.....2

'यह बात तो तुम पिछले छह साल से कह रहे हो पर जमीन का ग्राहक तुम्हें अभी तक नहीं मिला...जाने मिलेगा भी या नहीं?...मेरे इन पैसों का श्रीलता की शादी से क्या सम्बन्ध है? शादी पैसे लौटाने की शर्त है क्या?'

'नहीं ऐसा कुछ नहीं है. तुम्हारा पैसा तो तुम को देना ही है पर मेरी दिली इच्छा है की राघव को ही अपना दामाद बनाऊ.'

'राघव ने अभी एम.बी.बी.एस. पूरा नहीं किया है. उसके बाद वह एम.डी.करना चाहता है, उसके बाद शादी की सोचेंगे. उससे पहले तो कात्यायनी की शादी करनी है. हाथ में पैसा हो तो कहीं शादी की बात भी करूँ. बिना पैसे के तो मेरी बेटी ऐसे ही रह जाएगी, बिना शादी के. तभी तुम्हारे यहाँ चक्कर लगा रही हूँ. मेरे पैसे लौटा दो, मुझे ब्याज भी नहीं चाहिए.'

'आज तक किसी की बेटी बिना शादी के रही है जो तुम्हारी रह जाएगी ... हम लोग हैं न...सब मिल कर कोशिश करेंगे. तुम राघव से श्रीलता की शादी के लिए हाँ कर दो बस, शादी की हमें कोई जल्दी नहीं है, बाद में कर लेंगे'

'राघव अब बड़ा हो गया है, मैं उससे जबरदस्ती नहीं कर सकती. एक बार मैंने श्रीलता के बारे में उससे बात की थी तो उसने कहा-'मैं निकट रक्त सबंधों में शादी के खिलाफ हूँ, ऐसी शादियाँ करना मेडिकल प्वाइंट आफ व्यू से ठीक नहीं हैं...बच्चे शारीरिक, मानसिक रूप से विकलांग पैदा हो सकते हैं और भी बहुत कुछ हो सकता है.'

'रहने दो यह बातें, हमेशा से हम लोगों में ऐसी शादी होती आ रही हैं. तुम्हारी और मेरी शादी भी सगी बुआ के बेटे से हुई थी. हमारा तुम्हारा कौन सा बच्चा ख़राब या विकलांग है?'

'अब उससे बहस तो मैं नहीं कर सकती. अपने ही पैसे वापस लेने के लिए श्रीलता से उसकी शादी जबर्दस्ती करा भी दूं तो क्या गारंटी है वह तुम्हारी बेटी को खुश रखेगा?'

'आज तक किसी की बेटी बिना शादी के रही है जो तुम्हारी रह जाएगी ...हम लोग हैं न...सब मिल कर कोशिश करेंगे. तुम राघव से श्रीलता की शादी के लिए हाँ कर दो बस, शादी की हमें कोई जल्दी नहीं है, बाद में कर लेंगे'

अम्मा ने बुआ से न जाने क्या कहा था कि वह पापा से बिना मिले ही वापस लौट गई थीं...शायद रोती हुई. वैसे हमेशा ही वह रोती हुई लौटती हैं. उनके जाते ही मैं अम्मा पर बरस पड़ी थी-'तुम क्यों राघव के पीछे पड़ी हो, मुझे उससे शादी नहीं करनी. मेरे जीवन को, मेरी छोटी छोटी खुशियों को दाव पर मत लगाओ माँ. उनकी मजबूरी का फायदा उठा कर मुझे उनके गले में बांधने की कोशिश क्यों कर रही हो? मुझे जान बूझ कर कुए में मत फेंको. तुम्हारे द्वारा इतना सताए जाने के बाद भी क्या वो तुम्हारी बेटी को प्यार या उचित सम्मान दे सकेंगे? मैं उस घर में सर उठा कर चल सकूंगी? तुम्हारे गुनाहों की वजह से, मैं तो वैसे ही शर्मिंदा हूँ...मुझे वहां शादी नहीं करनी है. बुआ चाहेंगी तब भी नहीं' कह कर मैं वहां से हट गई थी. तभी पड़ोस की राव आंटी आ गई थीं, वह माँ से कह रही थीं 'तुम्हारी ननद आज रोती हुई लौटी हैं...कुछ कहा सुनी हो गई थी क्या?'

'अरे नहीं वह अपनी बेटी की शादी को लेकर परेशान हैं... उन्हें पचास साठ हजार रुपयों की जरुरत है...तुम तो जानती ही हो अपनी भी चार बेटियां हैं. इतनी बड़ी रकम कहाँ से देदें? कहीं से इंतजाम करा भी दिया तो वह वापस कहाँ से करेगी? इसी लिए दुखी है, हम भी क्या करें?'

मैं माथा थाम के बैठ गई थी, ओ माँ तुम इतनी झूठी हो यह मुझे अब तक नहीं पता था. मुझे क्या होता जा रहा है, दिन पर दिन मैं माँ के खिलाफ होती जा रही हूँ. उनका व्यवहार असहय होता जा रहा है. मन करता है जाकर सब के सामने उनका असली रूप प्रकट कर दूं. सब से कहूं वह बेईमान और धोखेबाज हैं. इस घर में अब एक मिनट भी दिल नहीं लगता, दम घुटता है मेरा यहाँ...कहीं दूर भाग जाने की इच्छा बलवती होने लगती है, पर कहाँ जाऊं?

पहले मुझे यह सब बातें विस्तार से नहीं मालूम थीं. जब बुआ आती थीं

तो मैं अक्सर स्कूल में होती थी. घर में होती भी थी तो अम्मा वहां बैठने नहीं देती थीं फिर कभी इतनी रूचि भी नहीं रही थी कि कुछ जानने की कोशिश करूँ. एक बार बुआ की बेटी कात्यायनी अक्का भी उनके साथ आई थी. तब उन्ही से सब कुछ जाना था. अक्का ने बड़े करुण स्वर में कहा था–'श्रीलता मामा/मामी से कह कर हमारे रुपये वापस करा दे न, हम बहुत परेशानी मे हैं. जैसे अपनी संतान को सही राह दिखाना माता पिता का काम होता है वैसे ही माता पिता द्वारा जाने अनजाने में यदि कुछ गलत हो रहा है तो बच्चों में उसका विरोध करने का साहस होना चाहिए . तभी कात्यायनी अक्का ने एक घटना सुनाई थी–'जब हमारे पिता जीवित थे तब उन्होंने हैदराबाद में मकान बनवाते समय अपने एक दोस्त से पंद्रह–बीस हजार रुपये यह कह उधार लिए थे कि एक दो महीने में ऑफिस से मिलते ही लौटा दूंगा. जब ऑफिस से रुपये मिले तो मेरे छोटे भाई बहन पीछे पड़ गए कि फ्रिज और टी वी चाहिए. पापा भी लाने को तैयार हो गए थे. मैंने पापा को याद दिलाया कि यह रुपये तो आप को अपने दोस्त को वापस देने हैं. पापा ने लापरवाही से कहा मकान का किराया आना शुरू हो गया है. थोड़े पैसे ऑफिस से अभी और आने हैं, तब लौटा दूंगा. बच्चे बहुत दिन से टी वी, फ्रिज की फरमाइश कर रहे हैं, पहले वही ला देता हूँ'...पर मैं अड़ गई थी 'हमें अभी कुछ नहीं चाहिए, पहले कर्जा वापस करिए. यह सामान बाद में भी आ सकता है.'

पापा बहुत खुश हुए थे 'थैंक यू कात्यायनी मैं बच्चों के मोह में भटक गया था, तुम ने बिलकुल ठीक कहा, पहले हमें कर्जा वापस करना चाहिए.'

कात्यायनी अक्का के जाने के बाद भी उनकी बातें मेरे कानों में गूंजती रही थीं 'हम मामा से कोई खैरात तो नहीं मांग रहे. पापा के बाद अब पैसा ही हमारी डूबती नाव को पार लगा सकता है. वो पैसा उनके मेहनत की गाढ़ी कमाई का था. पैसा न होने की वजह से सलेक्शन के बाद भी मैं मेडिकल में दाखिला नहीं ले पाई क्योंकि हम दोनों भाई बहनों की मेडीकल की पढाई का खर्चा अम्मा नहीं उठा सकती थीं. इसीलिए मैंने राघव को एडमीशन लेने दिया, खुद पीछे हट गई. अब पैसे नहीं मिले तो उसको पढाई बीच में छोड़नी पड़ेगी. दूसरा भाई इंजीनियरिंग में नहीं जा पायेगा. दोनों छोटी बहने भी पढ़ रही हैं. भाई तो बहनों की मदद करते हैं. मम्मी के इन भाई ने तो हमारा ही पैसा न देकर हमारी तकलीफें और बढा दी हैं.'

अपनी माँ से बात करना व्यर्थ था और पापा से बात करने की हिम्मत नहीं थी. पता नहीं आम परिवारों की तरह हम अपने पापा से क्यों नहीं घुल मिल पाए थे. शायद माँ व पिता दोनों को ही बेटा न होने का मलाल रहा है. वैसे हमारी सुख सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा गया है. कभी कोई अभाव महसूस नहीं होने दिया लेकिन कभी व्यर्थ का लाड़ भी नहीं लड़ाया गया.

अम्मा जब बीमार नानी से मिलने दो तीन दिन के लिए गाँव गई थीं तब पापा और बहनों की देखभाल और खाने पीने की जिम्मेदारी मेरी हो गई थी. तभी एक दिन पापा को अच्छे मूड में देख कर मैंने कहा था –'पापा आप बुआ का पैसा लौटा दो, उन्हें बहुत जरुरत है'

'बेटा, पैसा हाथ में होता तो कब का लौटा चुका होता..सब इधर उधर फंसे हैं.'

मैं कहना तो चाहती थी कि फंसे नहीं हैं, सब एक के दो और दो के चार हो रहे हैं लेकिन कह नहीं पाई. बस इतना ही कहा–'दस बीस हजार अभी भेज दें बाकी के कुछ दिन बाद भेज देना.'

'ठीक है. कुछ भेजने की कोशिश करता हूँ..अपनी माँ को नहीं बताना' पूछने का मन हुआ था कि आप माँ से इतना डरते क्यों हैं? बुआ आप की कमाई में से उधार या उपहार नहीं मांग रही हैं, वे अपने पैसे मांग रही हैं, माँ बीच में कहाँ से आ गयी? उनसे पूछने या न पूछने या छिपाने का प्रश्न ही कहाँ उठता है. पर चाह कर भी कुछ नहीं कह पाई .

..................क्रमशः.....

साहित्य समाचार

डा. स्नेह ठाकुर 'राष्ट्रभाषा गौरव सम्मान'

नई दिल्ली. भारत के संसद भवन के भव्य केन्द्रीय कक्ष में अध्यक्ष, ससंदीय हिन्दी परिषद्, माननीया संतोष खन्ना, महासचिव विधि भारतीय परिषद् एवं माननीया उर्मिल सत्यभूषण, अध्यक्ष-परिचय साहित्य परिषद् के तत्वावधान में आयोजित संसदीय हिन्दी परिषद् का गौरवयुक्त 'राष्ट्रभाषा उत्सव' सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ. यह गौरवशाली समारोह पद्मभूषण डा. सुभाष कश्यप, पूर्व महासचिव लोकसभा, एवं भारत के प्रतिष्ठित संविधान विद् की अध्यक्षता तथा मुख्य अतिथि डा. सत्य नारायण जटिया, पूर्व केन्द्रीय मंत्री, राज्यसभा के उपसभापति एवं संसदीय राजसभा समिति के उपाध्यक्ष के सान्निद्धय और गणमान्य विशिष्ट अतिथियों - डा. रमा-प्राचार्य, हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय : डा. अवनीश कुमार, अध्यक्ष वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग एवं निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार : डा. रामशरण गौड़, अध्यक्ष, दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड : प्रो. डा. पूरन चंद टंडन, प्रो. हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय तथा अन्य अतिथि गणों की उपस्थिति से अपनी भव्यता को प्राप्त हुआ.

राष्ट्र भाषा महोत्सव के प्रति समर्पित ऐसे भव्य समारोह में कैनेडा की डा. स्नेह ठाकुर-कवयित्री, लेखिका, सम्पादक-प्रकाशक-वसुधा हिन्दी साहित्यिक पत्रिका को 'राष्ट्र भाषा गौरव सम्मान' से सम्मानित किया गया. डा. स्नेह ठाकुर पूर्व में अन्य सम्मान एवं पुरस्कारों के साथ-साथ अपनी साहित्यिक साधना एवं हिन्दी के प्रचार-प्रसार-उन्नयन हेतु दिये गये योगदान के लिए राष्ट्रपति जी द्वारा 'हिन्दी सेवी सम्मान एवं दसवें विश्व हिन्दी सम्मलेन में विश्व हिन्दी सम्मान से भी सम्मानित हो चुकी हैं.

शशांक मिश्र भारती की लघुकथा निरुत्तर पर मिला सम्मान

जैमिनी अकादमी पानीपत हरियाणा द्वारा आयोजित 24वीं अखिल भारतीय लघुकथा प्रतियोगिता 2018 में ख्यातिलब्ध साहित्यकार संपादक व शिक्षक शशांक मिश्र भारती को उनकी लघुकथा निरुत्तर के लिए सांत्वना पुरस्कार मिला है. अकादमी के निदेशक डा० वीजेन्द्र कुमार जैमिनी के अनुसार दिनांक 25/11/2018 को आयोजन के बाद सम्मान पत्र पुरस्कार व नकद राशि का चेक आपको भेज दिये गए हैं. इस प्रतियोगिता में देश भर से एक सौ से अधिक लघुकथाकारों ने प्रतिभाग किया था.

शहीदों की नगरी के नाम से विश्व में विख्यात उत्तर प्रदेश शाहजहांपुर के पुवायां बड़ागांव निवासी यह सम्प्रति उत्तराखण्ड के टनकपुर में राजकीय इण्टर कालेज में संस्कृत प्रवक्ता के पद पर कार्यरत रहते हुए वहीं से अपनी साहित्य साधना में रत हैं. इनको इस उपलब्धि पर अनके साहित्यकार संपादक पत्रकार व शिक्षकों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बधाई दी है.

श्री हितेश शर्मा को सम्पादकश्री

देवसुधा पत्रिका, शाहजहांपुर, के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय ब्राह्मण समाचार पत्रिका, बिजनौर के संपादक श्री हितेश कुमार शर्मा को संपादकीय चिंतन के लिए सम्पादकश्री सम्मान से सम्मानित किया गया

कृष्ण कुमार यादव ने उत्तर प्रदेश के राज्यपाल को भेंट की अपनी पुस्तकें

लखनऊ मुख्यालय परिक्षेत्र के निदेशक डाक सेवाएँ एवं चर्चित साहित्यकार व ब्लहगर कृष्ण कुमार यादव ने उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक से राजभवन, लखनऊ में भेंट कर उन्हें अपनी पुस्तक १६ आने, १६ लोग" और अन्य कृतियाँ भेंट की. इस अवसर पर राज्यपाल महोदय ने श्री यादव को अपनी पुस्तक 'चरैवेति! चरैवेति!!' भेंट करते हुए अपनी शुभकामनाएँ दी. देश-विदेश की तमाम प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले श्री यादव की अब तक सात पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है।

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,** 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

1—20 वर्ष से कम उम्र वालों के लिएः पं. नेहरु सम्मान(देश हित व समाज सेवा), चन्द्रावती देवी सम्मान (हिन्दी व साहित्य सेवा), गोरखनाथ दुबे स्मृति सम्मान(समाज सेवा), बचपना सम्मान (किसी भी क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए) **2—20 से 40 वर्ष के लिएः** काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान के लिए), पवहारी शरण द्विवेदी सम्मान(समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान के लिए) निर्भया सम्मान-(महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए किए गये कार्य के लिए), पत्रकारश्री (पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान), कलाश्री(कला (नाटक/गायन/वादन/चित्रकला, नृत्य) के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), समाजश्री (समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), काव्यश्री (काव्य लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), व्यंग्यश्री (व्यंग्य-गद्य/पद्य लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), कहानीश्री (लघुकथा/कहानी के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए) **3—40 वर्ष से ऊपर के लिएः** डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), पत्रकार रत्न (पत्रकारिता/संपादन के क्षेत्र में कम से कम बीस वर्ष का अनुभव), समाज शिरोमणि (समाज सेवा के क्षेत्र में कम से कम बीस वर्ष का अनुभव), काव्य शिरोमणि (एक पुस्तक न्यूनतम 100 पृष्ठीय पाण्डुलिपि/प्रकाशित), साहित्य शिरोमणि (समग्र साहित्य लेखन, एक पुस्तक न्यूनतम 100 पृष्ठीय पाण्डुलिपि/प्रकाशित) **4-सभी आयु वर्ग के लिएः हिन्दी सेवियों के लिएः** विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान (हिन्दी की विशेष सेवा के लिए), **राष्ट्रभाषा सम्मान** (हिन्दीत्तर भाषी राज्यों के हिन्दी प्रेमियों के लिए जो हिन्दी का व्यापक प्रचार-प्रसार व लेखन कार्य कर रहे है), **राजभाषा सम्मान**-(सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए). **शिक्षकश्रीः** (शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए), **विधिश्री**-(विधि के क्षेत्र में रहते हुए हिन्दी सेवा के लिए) 5-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमशः साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं. इनके लिए कम से कम 100 पृष्ठों की किसी एक विषय पर साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,** 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-1—20 **वर्ष से कम उम्र वालों के लिएः** पं. नेहरु सम्मान(देश हित व समाज सेवा), चन्द्रावती देवी सम्मान (हिन्दी व साहित्य सेवा), गोरखनाथ दुबे स्मृति सम्मान(समाज सेवा), बचपना सम्मान (किसी भी क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए) 2—20 से 40 **वर्ष के लिएः** काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान के लिए), पवहारी शरण द्विवेदी सम्मान(समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान के लिए) निर्भया सम्मान-(महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए किए गये कार्य के लिए), पत्रकारश्री (पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान), कलाश्री(कला (नाटक/गायन/वादन/चित्रकला, नृत्य) के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), समाजश्री (समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), काव्यश्री (काव्य लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), व्यंग्यश्री (व्यंग्य-गद्य/पद्य लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), कहानीश्री (लघुकथा/कहानी के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए) 3—40 **वर्ष से ऊपर के लिएः** डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), पत्रकार रत्न (पत्रकारिता/संपादन के क्षेत्र में कम से कम बीस वर्ष का अनुभव), समाज शिरोमणि (समाज सेवा के क्षेत्र में कम से कम बीस वर्ष का अनुभव), काव्य शिरोमणि (एक पुस्तक न्यूनतम 100 पृष्ठीय पाण्डुलिपि/प्रकाशित), साहित्य शिरोमणि (समग्र साहित्य लेखन, एक पुस्तक न्यूनतम 100 पृष्ठीय पाण्डुलिपि/प्रकाशित) **4-सभी आयु वर्ग के लिएः हिन्दी सेवियों के लिएः** विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान (हिन्दी की विशेष सेवा के लिए), **राष्ट्रभाषा सम्मान** (हिन्दीत्तर भाषी राज्यों के हिन्दी

प्रेमियों के लिए जो हिन्दी का व्यापक प्रचार-प्रसार व लेखन कार्य कर रहे है), **राजभाषा सम्मान**-(सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए). **शिक्षकश्रीः** (शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए), **विधिश्री**-(विधि के क्षेत्र में रहते हुए हिन्दी सेवा के लिए)

5-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमशः साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं. इनके लिए कम से कम 100 पृष्ठों की किसी एक विषय पर लिखि पाण्डुलिपि जो 2016 के बाद लिखी गई हो, प्रकाशित/अप्रकाशित हो, पर दिया जाएगा. प्रत्येक के लिए दो हिन्दी साहित्य सेवी प्रस्तावक का होना आवश्यक है.

विशेषः 1. प्रत्येक वर्ग के लिए दिये गये विभिन्न सम्मानों के लिए उत्कृष्ठ किसी एक का ही चयन किया जाएगा। 2. उपाधियों के लिए चयन त्रिस्तरीय निर्णायक मंडल द्वारा किया जाएगा. 3. प्रत्येक प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा साथ में एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका भेजना होगा। 4. क्रम संख्या एक के लिए सहयोग राशि रुपये 100/ मात्र तथा क्रम संख्या 2 से 5 के लिए रुपये 500/ सहयोग अपेक्षित है। 5. सभी आयु वर्ग में शामिल प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज मासिक की वार्षिक सदस्यता (रुपये 150/ निशुल्क) प्रदान की जायेगी। 6. सभी वर्ग में विजयी प्रतिभागियों को विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की साधारण सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जाएगी। 7. क्र.सं. 2 से 5 तक के सभी प्रतिभागियों को संस्थान द्वारा प्रकाशित रुपये 500/ तक की पुस्तकें उपहार स्वरुप प्रदान की जायेगी। 8. सहयोग राशि बैंक ड्राफ्ट/ध नादेश/ सीधे खाते में (आन लाईन/ऑफ लाईन) युनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी भी शाखा से 'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद' के नाम से खाता संख्याः 538702010009259 आईएफएससी कोड–यूबीआईएन–0553875 में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा. 9. किसी भी दशा में रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी. 10. रचनाओं के साथ मौलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. सम्मान डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा. 11. अपूर्ण प्रविष्टियों पर विचार करना संभव नहीं होगा। 12. किसी प्रकार के विवाद के संबंध में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद(प्रयागराज) होगा. अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए ईमेल करे, या व्हाट्सएप करें:

अंतिम तिथिः 15 नवम्बर 2019

संपर्क कार्यालयः

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
65ए/2, श्याम डी.जे., लक्सों कंपनी के सामने, रामचन्द चन्द्र मिशन रोड, मुंडेरा, धूमनगंज, इलाहाबाद (प्रयागराज)–211011, ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com, 9335155949

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण **1.प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर 2. बिक्री की व्यवस्था 3.प्रचार-प्रसार की व्यवस्था 4.विमोचन की व्यवस्था**

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें

प्रसार सचिव,

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011

ई–मेलः sahityaseva@rediffmail.com

16वां साहित्य मेला कैमरे की नजर में

मंचासीन अतिथियों के साथ सभी सम्मानित विद्वजन

श्री मिथिलेश कुमार श्रीवास्तव को सम्मानित करते हुए
डॉ0 उदय प्रताप सिंह

मुख्य अतिथि दर्जा प्राप्त राज्य मंत्री डॉ0 उदय प्रताप सिंह
अपने विचार व्यक्त करते हुए

अशोक कुमार गुप्ता को सम्मानित करते हुए अतिथिगण

अपने विचार व्यक्त करते हुए पूर्व मण्डलायुक्त श्री बादल चटर्जी

काव्य (गीत) प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता में देश/विदेश का कोई भी हिन्दी सेवी, साहित्यकार प्रतिभाग कर सकता है। इस प्रतियोगिता में अधिकतम 400 शब्दों के अंदर एक लय बद्ध गीत की रचना करनी होगी। गीत का विषय विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान का कुल गीत होगा। संस्थान के बारे में विस्तृत विवरण आपको ई-मेल या व्हाट्सएप पर मांग करने पर प्रदान की जाएगी।

नियम एवं शर्तें:

01 रचनाकार को अपनी रचना की कॉपी ई-मेल के माध्यम से 30 जून 2019 तक भेजना होगा।

02 संस्थान की कमेटी द्वारा प्राप्त गीतों में से सर्वोच्च पांच गीतों का चयन किया जायेगा।

03 सर्वोच्च चयनित पांच गीतकारों को 18वें साहित्य मेला के अवसर पर गीत वाचन के लिए आमंत्रित किया जाएगा।

04 सर्वोच्च चयनित गीत के गीतकार को रुपये 1500/ नगद राशि तथा सभी पांचों गीतकारों को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह प्रदान किया जायेगा।

05 चयनित गीत को वाद्य यंत्र के साथ स्वरबद्ध कराकर संस्थान के कुल गीत (आडियो/वीडियो) के रूप में संस्थान की स्थापना के 25वर्ष पूरे होने पर शामिल किया जायेगा। जिसमें गीतकार, गायक, वादक आदि के नाम सहित आगे प्रचारित प्रसारित किया जायेगा।

06 मोबाइल पर संपर्क न करे, जो जिज्ञासा हो उसे व्हाट्सएप नंबर पर भेजे।

07 अपने गीत भेजते समय विषय में : कुलगीत प्रतियोगिता अवश्य लिखें।

08 इस प्रतियोगिता में संस्थान के सदस्य/पदाधिकारी भी प्रतिभाग कर सकेंगें।

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

संपर्क कार्यालय: 65ए/2, श्याम डीजे, लक्सॉ कंपनी के सामने, रामचन्द्र मिशन रोड, मुण्डेरा चुगी, इलाहाबाद
प्रधान कार्यालय: एल.आई.जी-93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफूसी-09335155949 ईमेल: sahityaseva@rediffmail.com
व्हाट्सएप नंबर: 9335155949
ईमेल: hindiseva15@gmail.com